www.thearyasamaj.org

॥ ओ३म् ॥

॥ कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ॥

वेद प्रतिपादित मानवीय मूल्यों को
जन-जन तक पहुँचाने हेतु कार्यतत्पर
सशक्त एवं समर्थ प्रान्तीय आर्य संगठन

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का
मासिक मुखपत्र

वैदिक गर्जना

वर्ष १३ अंक ९ सितम्बर २०१३

वेदोद्धारक, युगप्रवर्तक महर्षि दयानन्द

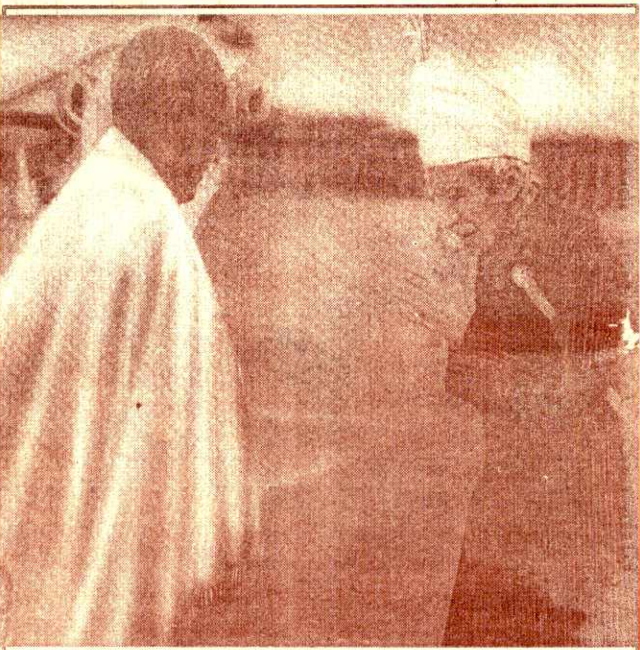

स्वतंत्र भारत के प्रथम गृहमंत्री लौहपुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल को हैदराबाद संस्थान के पूर्व अधिपति निजाम मीर उस्मान अलीखान का अभिवादन ! (फरवरी १९४९)

"आर्य समाज ने यदि पहले से भूमिका तैयार न की होती, तो तीन दिन में हैदराबाद राज्य में पुलिस ऐक्शन सफल नहीं हो सकता था !" - सरदार वल्लभभाई पटेल

www.thearyasamaj.org

परली में सामूहिक संस्कृत दिवस समारोह

दीप जलाकर उद्घाटन करते हुए प्रमुखातिथि डॉ.विमलकुमारजी आर्य,कर्मवीरजी, संयोजक श्री उग्रसेनजी राठौर, जी.एस.सौंदळे व प्रशांतकुमार शास्त्री आदि ।

समारोह में संस्कृत विषयपर मार्गदर्शन करते हुए डॉ.विमलकुमारजी आर्य ।

संस्कृत सुभाषित प्रतियोगिता में विजेता छात्रों को पुरस्कार प्रधान करते हुए प्रायोजक व आर्य समाज परली के उपमन्त्री श्री जयपालजी लाहोटी ।

www.thearyasamaj.org

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का

मासिक मुखपत्र

वैदिक गर्जना

सृष्टि सम्वत् १,९६,०८,५३,११४ | कलि संवत् ५११४ | विक्रम संवत २०७०

दयानन्दाब्द १८९ | भाद्रपद | १० सितम्बर २०१३

प्रधान सम्पादक
राजेन्द्र दिवे
(मो. ०९८२२३६५२७२)

सम्पादक
प्रा.डॉ.नयनकुमार आचार्य
(मो. ०९४२०३३०१७८)

सहसम्पादक-डॉ.ब्रह्ममुनि वानप्रस्थ (मो. ९४२११५११९०४), प्रो.देवदत्त तुंगार (०९३७२५४१७७७)
प्रा.भूदेव विद्यालंकार, प्रा. सत्यकाम पाठक, ज्ञानकुमार आर्य

अनुक्रम

हिन्दी विभाग

१) अधूरी है यह पुरोगामिता (सम्पादकीय)....२
२) श्रुतिसन्देश/ऋणनिर्देश....३
३) शिक्षा व्यवस्था धार्मिक मूल्यों की आवश्यकता....४
४) एक प्रेरक व्यक्तित्व-प्रो. भूदेव पाटील....७
५) प्रान्तीय पुरोहित प्र.शिविर-वृत्तान्त....९
६) शोक समाचार....११
७) सभा उपक्रम....१२

मराठी विभाग

१) उपनिषद संदेश/ दयानंदांची अमृतवाणी....१३
२) गाथा वाचू दयानंदांची....१४
३) आदि वेदमाऊली-देई सर्वभूतां सावली....१६
४) संगतिकरण : यज्ञाचे प्रमुख लक्षण....१८
५) हैद्राबाद मुक्तिसंग्राम आणि आर्य समाज....२१
६) आर्यांची शौर्यगाथा-'मुक्तिसग्राम'....२४
७) वार्ता विशेष....२६
८) शोक वार्ता....२७
९) खास वाचकांसाठी-म.दयानंदांचे कॉमिक्स (मराठी)....३०

● प्रकाशक ●
मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा,
सम्पर्क कार्यालय-आर्य समाज
परली-वैजनाथ ४३१५१५

● मुद्रक ●
वैदिक प्रिन्टर्स
महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा
आर्य समाज, परळी-वै.

-वैदिक गर्जना के शुल्क-
वार्षिक - रु. ५०/-
आजीवन रु. ५००/-

इस मासिक पत्रिका में प्रकाशित लेखों तथा विचारों से सम्पादक मण्डल सहमत हो, यह अनिवार्य नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र परली-वैजनाथ जि.बीड ही होगा

www.thearyasamaj.org

सम्पादकीयम्

अधुरी है यह 'पुरोगामिता' !

पिछले माह महाराष्ट्र के एक समाजसेवी डॉ. नरेन्द्रजी दाभोलकर की निर्मम हत्या हुई। धार्मिक अन्धविश्वासों व पाखण्डवाद के विरोध में लगभग ३० वर्षों से उनका संघर्ष जारी था। 'अन्धविश्वास निर्मूलन समिति (अनिस)' नामक राज्यस्तरीय संगठन के माध्यम से वे और उनके कार्यकर्त्ता जगह-जगह पर आन्दोलन चलाते थे। वैज्ञानिक दृष्टिकोन को आधार बनाकर समाज में फैली धार्मिक रूढि-परम्पराओं, सामाजिक कुरीतियों, कर्मकाण्ड, आडम्बर, काला जादू, चमत्कार आदि दोषों को वे दूर करना चाहते थे। मत-सम्प्रदाय व जातिवाद के भी वे कट्टर विरोधी थे। डॉ. दाभोलकर जिन विचारों को लेकर कार्यरत थे, उन्हें महाराष्ट्र में 'पुरोगामी' अर्थात प्रगतिशील विचारधारा कहते हैं, जिसका सूत्रपात एक समय म. ज्योतिराव फूले, आगरकर, राजर्षि शाहु, डॉ.अम्बेडकर आदि महाराष्ट्रीयन सुधारकाचार्यों ने किया था। इसलिए इस राज्य को पुरोगामी राज्य के रूप में जाना जाता है। जब कभी इस राज्य में अमानवीय वारदातें होती हैं, तब यही कहा जाता है- 'पुरोगामी महाराष्ट्र कलंकित हुआ, तर्कसंगत सोच की हत्या हुई आदि-आदि.....।' डॉ. दाभोलकर की हत्या पर भी अखबारों व टीवी चैनलों पर इन्हीं बातों को बार बार दोहराया गया।

प्रश्न यह उठता है कि तथाकथित यह प्रगतिशील (पुरोगामी) विचारधारा आखिर क्या मायने रखती है ? इन विचारों के पक्षधर यद्यपि अन्धविश्वासों व पाखण्डों का विरोध करते हैं, वैज्ञानिक दृष्टिकोन को अपनाते हैं, किन्तु आत्मा-परमात्मा के शुद्ध स्वरूप व उसके प्रतिपादक वेदादि आर्ष तत्त्वज्ञान को वे कदापि नहीं मानते। मानते भी हो तो, उनमें एकविचार नहीं हैं। ईश्वर, धर्म व अध्यात्म के नाम पर चल रहे पाखण्ड, अधर्म व अन्धविश्वास का विरोध आवश्यक है। यह कार्य तो आर्य समाज पिछले १३८ वर्षों से लगातार करता आ रहा है, जिसकी ओर हमारे सुधारवादी नेताओं का ध्यान नहीं गया। आध्यात्मिकता के वास्तविक स्वरूप को न समझना पूरी तरह से अनुचित हैं। क्योकिं अध्यात्म के विना केवल विज्ञान पशुता की ओर ले जायेगा। इस दृष्टि से उनकी यह प्रगतिशील (पुरोगामी) विचारधारा अधुरी सिद्ध होती है। डॉ. दाभोलकरजी व उनकें आन्दोलन की दिशा विज्ञान के साथ विशुद्ध आध्यात्मिकता को मानने से ही परिपूर्ण हो सकती हैं। महर्षि दयानन्द ने वेदधर्म की जो पुनर्स्थापना की थी,वह निश्चय ही विवेकपूर्ण, सर्वसमावेशक, प्राणिमात्र के कल्याण व विश्वशान्ति हेतु सार्थक थी। अतः विवेक व तर्क के आधार पर वैदिक विचारों को अपनाने से ही सही अर्थों में पुरोगामिता सिद्ध हो सकती हैं।

-डॉ.नयनकुमार आचार्य

www.thearyasamaj.org

श्रुति संदेश

दुराचार से सदाचार की ओर

परि माग्ने दुश्चरिताद्बाधस्वा मा सुचरिते भज ।
उदायुषा स्वायुषोदस्थाममृतां अनु ॥ (यजु.४/२८)

शब्दार्थ :- हे (अग्ने) ज्ञान स्वरूप परमेश्वर ! आप (मा) मुझे (दुश्चरितात्) दुराचार, दुष्टाचार से (परि बाधस्व) दूर हटाओं और (मा) मुझको (सुचरिते) उत्तम चरित में, सदाचार में (आ भज) स्थापित करो। मैं (अमृतान्) जीवन्मुक्त, श्रेष्ठ सदाचारी पुरूषों का (अनु) अनुकरण करके (उत् आयुषा) उत्कृष्ट जीवन और (सु आयुषा) सुदीर्घायु से युक्त होकर (उद् अस्थाम्) उत्तम मार्ग में स्थिर रहें ।

भावार्थ :- इस मन्त्र में कितनी सुन्दर प्रार्थना और कामना है-

प्रभो ! तू मझे दुराचार से छोडकर सदाचार की ओर ले चल। और मुझे ऐसी शक्ति प्रदान कर कि मैं जीवनमुक्त, श्रेष्ठ और सदाचारी पुरूषों का अनुसरण कर सकूं यहां पर बताया गया है कि महापुरूषों के अनुसरण से जीवन उन्नत, उत्कृष्ट, दीर्घायुषी और चरित्रवान बनेगा ।

(स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती कृत 'वेदसौरभ' से साभार)

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा

मानव जीवन कल्याण वेद ज्ञान प्रचार अभियान २०१३ (श्रावणी पर्व)

-विद्वानों के प्रति 'ऋणनिर्देश'-

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा गत दि.७ अगस्त से ५ सितम्बर २०१३ के दौरान राज्य में व्यापक रूप में **'मानव जीवन कल्याण वेदज्ञान प्रचार अभियान'** सफलता के साथ सम्पन्न हुआ। इसके लिए सभा ने उत्तर भारत के १० तथा इस प्रांत के लगभग ४५ विद्वानों व भजनोपदेशकों को आमंत्रित किया था। सभी ने पूर्वनिर्दिष्ट विभिन्न तिथियों में अलग-अलग लगभग सवा सौ आर्य समाजों में पहुंचकर बडी निष्ठा, लगन व सहृदयता के साथ वेदप्रचार किया। इन विद्वानों को यात्रा, निवास तथा अन्य व्यवस्था में कुछ अव्यवस्था, असुविधा हुई होगी तथा नानाविध कष्ट उठाने पडे होंगे । इसके लिए हम क्षमाप्रार्थी हैं।

विशेषत: बाहर से पधारे विद्वानों ने पूरा एक माह का समय इसके लिए दिया । अपने घर-परिवार की सारी जिम्मेदारियों को छोडकर हमारी सभा के निवेदन को सहर्ष स्वीकार कर वेदप्रचार के पवित्र कार्य में अपना पूरा योगदान दिया। अतः हम आपके सविनय ऋणी हैं। सभी विद्वानों व भजनोंपदेशकों का सहृदय धन्यवाद एवं आभार ! इसी प्रकार से आगामी वर्ष में भी सहयोग मिलें, यही शुभ आकांक्षा !

आभारोत्सुक-महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा

www.thearyasamaj.org

शिक्षाव्यवस्था में धार्मिक मूल्यों की आवश्यकता

-डॉ. ब्रह्ममुनि वानप्रस्थी

इस संसार में मानव ही परमपिता परमात्मा की सर्वश्रेष्ठ निर्मिति हैं । इसे बुद्धि का वरदान प्राप्त है । ईश्वर ने मनुष्यों के लिए स्वतंत्रता प्रदान की है, किन्तु फल की प्राप्ति उसके हाथ में नही है । दुनियां में सभी प्राणी भोगयोनियां कहलाती है । उन्हें ईश्वर ने उपजत ज्ञान दिया है । वे सृष्टि के नियमों का पालन करते हैं । इसलिए उन्हें निसर्गतः जीने के लिए कोई शिक्षा देने की आवश्यकता नहीं हैं, किन्तु मनुष्यों के बारे में वैसा नहीं हैं । इसे तो नैसर्गिक दृष्टि से जीवन जीने के लिये सिखाना पडता हैं । इतना ही नही, मानव जन्म किसलिये मिला है ? यह भी उसे बताना पडता है । सृष्टि की सभी वस्तुओं का ज्ञान, उसका उपयोग तथा स्वयं का ज्ञान यह सब उसे बताना पडता हैं । इसी कारण परमात्मा ने श्रेष्ठतम गुरू होने के नाते सभी ऋषि-मुनियों को वेदोंद्वारा सृष्टि का ज्ञान प्रदान किया है ।

ऋषियों ने आगे चलकर गुरू-शिष्यों की परम्परा सुरू की । सत्य ज्ञान ही मानव जीवन को सफल बना सकता हैं । सुख, शान्ति, ऐश्वर्य, दीर्घायु, शाश्वत आनन्द, सुखसमृद्धि, मोक्ष आदियों को मनुष्य ज्ञान द्वारा प्राप्त करता है । यह सब कुछ इस सृष्टि में परमात्मा की सुयोग्य व्यवस्था में यथायोग्य समय पर चल रहा है । सत्यज्ञान समय पर मिलना चाहिए, तभी मनुष्य को सुरक्षा मिल सकती है । इसलिए माता के उदर में जब शिशु का प्रवेश होता है, तभी से उसे शिक्षा देनी शुरू करनी चाहिए । वैसे तो परमात्मा अंदर से मनुष्यों को अच्छी प्रेरणा देता ही रहता है । इसीलिए वह ही पहला गुरू है । बालक के जन्म लेने के पश्चात् माता,पिता, आचार्य आदि सभी शिक्षा देते हैं और सिखाते हैं, लेकिन यह तो बाद की बात है ।

शिक्षा व्यवस्था में अपनी भावनाएं प्रकट करने, अर्थ जानने व व्यवहार के लिए भाषा सिखाई जाती है । बालक के जन्म से लेकर २५ वर्ष तक का समय केवल शिक्षाप्राप्ति के लिए रखा गया है । शिक्षा का मुख्य उद्देश्य सत्य ज्ञान की प्राप्ति है । सृष्टि का ज्ञान-विज्ञान बताना, सच्चे ईश्वर को जानना, उसकी नियम व व्यवस्था को समझना, 'मैं कौन हूँ ?' इसके बारे में जानकारी करना तथा शरीर-मन-बुद्धि व आत्मा का ज्ञान और आत्मा के साधनों की जानकारी आदि बातें समझना, यही शिक्षा का सही उद्देश्य माना जाता हैं । आत्मा के कल्याण व मोक्षप्राप्ति के लिये क्या-क्या करना चाहिए, यह बताना और शारीरिक,

www.thearyasamaj.org

मानसिक, बौद्धिक, आत्मिक उन्नति के लिए बच्चों को प्रवृत्त करना, यह भी इसका उद्देश्य है । शरीर, मन, बुद्धि आदि को सुदृढ बनाना, इन्हें बिगडने से बचाना, कार्यक्षम, पवित्र व बलवान बनाने हेतु प्रेरित करना ये सभी आदर्श शिक्षा का ही एक भाग कहलाता है बच्चों को मन व इंद्रियों पर विजय प्राप्त करने सिखाना, धार्मिक बनाना, मानवीय मूल्यों को धारण करना और साथ ही उन्हें विद्वान, चरित्रवान, धैर्यवान, परोपकारी, ईमानदार, दयावान, ईश्वरभक्त व सादगीपूर्ण जीवन जीनेवाला नेक व श्रेष्ठ इन्सान बनाना,यह शिक्षाप्रणाली में जरूरी है। छोटी अवस्था में छात्रों में ही समाज व राष्ट्र के प्रति कर्त्तव्य तथा सेवाधर्म व अच्छे कामों के लिए समर्पित भावना का भी विकास करने के लिए प्रयत्न होना चाहिए । ईश्वरभक्त माता-पिता व आचार्य तथा वृद्धों की सेवा करने के भावना भी आदर्श शिक्षा का ही एक हिस्सा होना चाहिए।

बच्चे जीवन भर **'एक श्रेष्ठ नागरिक'** बनने के साथ ही आदर्श पिता-माता, गुरू, प्रामाणिक अधिकारी, डॉक्टर, इंजिनिअर, कर्मचारी आदि बनकर अपने साथ स्वयं के परिवार व समाज का कल्याण करे, ऐसी शिक्षापद्धति होनी चाहिए । एक समय समग्र विश्व के लोग भारत में आकर ऋषि-मुनियों के चरणों में बैठकर उच्च आदर्शों व उत्तम सच्चरित्र की शिक्षा लेते थे । महर्षि मनु महाराज कहते हैं -

एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः
स्वं स्वं चरित्रेण शिक्षेरन्
पृथिव्याः सर्वमानवाः ।

दुर्भाग्य से आज सर्वत्र मेकाले की पाश्चात्य शिक्षा पद्धति लागू है । जिसमें चरित्र वा नीतिमूल्यों को कुछ भी स्थान नहीं है। भारत में केवल नौकरों का निर्माण हो, यही मेकाले की शिक्षापद्धति का उद्देश्य था । भारतीय तत्त्वज्ञान पर श्रद्धा न रखने वाले और पाश्चात्य सभ्यता को स्वीकारनेवाले तथा अंग्रेजी विचारों का गुलाम बननेवाले समाज का निर्माण हो यही उसकी इच्छा थी । सत्य ईश्वर व सच्चे धर्म को जानने पहचानने में यहां का हर एक नागरिक पीछे रहें, यह भी उसकी आकांक्षा थी। साथही इसके माध्यम से ईसाई धर्म का प्रचार व प्रसार हो, यह भी मेकाले की नीति थी । भारत देश इसी कारण बौद्धिक दृष्टि से अंग्रेजों का गुलाम बनते आया है । स्वतंत्रता के पश्चात् भी भारत में पाश्चात्य शिक्षापद्धति व पाठ्यक्रम उन्हीं की भांति जारी है। इसी का परिणाम है कि आज देश के हजारों पढे-लिखे लोग विद्वान, डॉक्टर, इंजिनिअर, अधिकारी आदि सभी मानसिक, बौद्धिक व आत्मिक दृष्टि से समस्याग्रस्त हैं। व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक व राष्ट्रीय स्तर पर वे प्रगत नहीं हैं। इनमें अशान्ति, बेचैनी, बेईमानी, क्रूरता, हिंसा, क्रोध, पागलपन, व्यभिचारिता,

www.thearyasamaj.org
ईर्ष्या-द्वेष, अन्याय, अत्याचार, भय, चिन्ता, आदि दोष बडे पैमाने पर बढ रहे हैं, जिससे सर्वत्र दानवता का साम्राज्य छाया हुआ है और देश से मानवता लुप्त हो चुकी है। इसलिए अब दुनियां के लोग सोच रहे हैं कि अब क्या किया जाय , किस प्रकार से मनुष्य का निर्माण हो ? संसार में मानवता धर्म की स्थापना कैसे हो सकती है आदि ? दिन-प्रतिदिन शिक्षा व्यवस्था की दुर्दशा पर सभी शिक्षातज्ज्ञ चिन्तीत हैं। मानवता की शिक्षा व धार्मिक मूल्यों के आचरण के बिना ये समस्याएं छुटेगी नहीं। अतः शिक्षाविदों को शिक्षापद्धति में धार्मिक व नैतिक मूल्यों का अन्तर्भाव कराना ही पडेगा।

आज धर्म के नाम पर बहुत सारे मत-पंथ काम कर रहे हैं। उन सबके मूल में सत्य नहीं बल्कि असत्य, अज्ञान व अन्धविश्वास है। अतः संकीर्णता के आधार पर टिके होने कारण इनके द्वारा शिक्षा में सुधार होना दुष्कर है। इनके विचारों से सब का कल्याण नहीं हो सकता। इसलिए सारी दुनियां को महर्षि स्वामी दयानंद की वैदिक शिक्षा व सभ्यता के शरण में आना ही पडेगा। स्वामीजीं ने वेदादि आर्ष ग्रन्थों के आधार पर सत्य ज्ञान, ईश्वर का वास्तविक स्वरूप, उसकी व्यवस्था, सच्चा मानवधर्म और श्रेष्ठ मानवीय मूल्यों के आधार पर आदर्श शिक्षा का पथ दर्शाया हैं। 'इस शिक्षा के माध्यम से ही मानव का सर्वांगिण, सम्पूर्ण विकास हो सकता है,' यह उनका कथन था।

अतः हमारी शिक्षा सत्यधर्म पर व मानवीय मूल्यों पर आधारित होनी चाहिए। शिक्षा व्यवस्था में सत्य धर्म का अनन्य महत्त्व है। उत्तम खान-पान, आदर्श दिनचर्या, ब्रह्मचर्य, उंचे विचार, श्रेष्ठ ध्येय, तपस्या, ईमानदारी आदि बातों का शिक्षा में अन्तर्भाव हो। योगाभ्यास के माध्यम से धर्म के स्वरूप को समझाया जाये, तो मानव महान बन सकता है।

पंचमहायज्ञ, वर्ण व आश्रम व्यवस्था, धर्म अर्थ, काम मोक्ष, ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना व उपासना,ज्ञान, कर्म व निस्वार्थ भाव से सेवा, समर्पित भावना, विश्वबंधुता, भूतदया आदि बातें भी शिक्षा पद्धति में होनी चाहिए। अन्यथा इसके बिना सारी शिक्षा व्यवस्था खोकली बन जायेगी। धर्म ही शिक्षा का आत्मा हैं। ऐसी शिक्षा जब होगी, तभी समग्र विश्व की सारी समस्याओं का स्थायी समाधान होगा और सभी लोग शाश्वत सुखी बनेंगे।

-आर्य समाज, परली-वैजनाथ,
जि.बीड मो. ९४२१९५१९०४

www.thearyasamaj.org

एक प्रेरक व्यक्तित्व - प्रो.भूदेव पाटील

-प्रो. ओमप्रकाश होलीकर (विद्यालंकार)

लातूर जिले के शिरोळ नामक ग्राम के संपन्न, सुसंस्कृत और संभ्रान्त कृषक श्री व्यंकटरावजी पाटील के परिवार में दि. १२ जनवरी १९३२ में श्री भूदेवजी का जन्म हुआ। पिताश्री व्यंकटरावजी तथा माता सौ. इंदिराबाई विद्याप्रेमी अभिभावक थे। निजाम के शासन काल में ग्रामीण परिवेश में शिक्षा की सुविधा न थी। माता-पिता विद्याप्रेमी होने के साथ-साथ वैदिक संस्कृति के अनुरागी थे। अतः उन्हें विद्याध्ययन के लिए प्रख्यात क्रांतिकारी, स्वतंत्रता सेनानी और योद्धा पत्रकार द्वारा स्थापित भारतीय संस्कृति की संवाहिका संस्था गुरूकुल कांगडी विश्वविद्यालय के अधीनस्थ गुरूकुल कुरूक्षेत्र में भेजा गया। प्राचीन ऋषि संस्कृति परम्परा क के प्रतीक गुरूकुल कुरूक्षेत्र में आपकी विद्यालयीन शिक्षा सम्पन्न हुई। यहीं पर आपके व्यक्तित्त्व में तप, त्याग, सेवा, गुरूश्रद्धा, माता-पिता की सेवा इ. संस्कारों का बीजवपन किया गया। तदनंतर आपने महाविद्यालयीन शिक्षा गुरूकुल कांगडी विश्वविद्यालय (हरिद्वार) से विद्यालंकार उपाधि प्राप्त की। संस्कृत के प्रति अनुराग के कारण मेरठ से आपने एम.ए.संस्कृत किया तथा उस्मानिया (हैदराबाद) विश्वविद्यालय से हिन्दी में एम.ए.किया।

प्रारंभ में हैदराबाद के बुद्रुका कॉलेज में २ वर्ष तक संस्कृत का अध्यापन कार्य किया। तदनंतर उमरगा में ३ वर्ष और लातूर के दयानंद महाविद्यालय में हिन्दी के विभागाध्यक्ष के रूप में कार्य कर सन् १९९२ में आप सेवानिवृत्त हुए। विभागाध्यक्ष रहते हुए अपने गुरूकुलीय संस्कारों के कारण आपने लघुता-गुरूता, निजत्व-परत्व, जातीय-विजातीय, प्रांतीय- परप्रांतीय इत्यादि भित्तिकाओं को कभी नहीं स्वीकारा। गुणग्राहकता और अध्यापनवृत्ति की लगन आपके प्राध्यापकों के चयन के विषय रहे। साहित्यशास्त्र और भाषाविज्ञान भी आपके प्रिय विषय रहे।

अध्यापन के साथ-साथ आप अनेक शैक्षिक समितियों के पदाधिकारी तथा सदस्य रहे। मराठवाडा विश्वविद्यालय की कार्यकारिणी के भी आप सदस्य रहे। इसके अतिरिक्त महाराष्ट्र राज्य उच्च माध्यमिक शिक्षण मंडल- पुणे, मराठवाडा विश्वविद्यालय अधिसभा के सदस्य, मराठवाडा वि.वि. हिंदी अध्ययन मंडल के सदस्य के रूप में आपने कार्य किया। **'लातूर पैटर्न'** के निर्माता राजर्षि शाहू महाविद्यालय की स्थापना में आपकी महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। इस महाविद्यालय की स्थापना से लेकर आज तक आप इसके

www.thearyasamaj.org

कार्यकारिणी के सदस्य हैं। शिक्षा के साथ-साथ शारीरिक विकास के लिए क्रीडा की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। आप स्वयं विद्यालयीन तथा महाविद्यालयीन स्तर पर भारतीय एकादश संघ के सदस्य रहे। लातूर नगरी में खो-खो, कबड्डी, हॉकी तथा क्रिकेट इ. खेलों को लोकप्रिय बनाने में तथा क्रीडा का वातावरण बनाने में आपकी अहं भूमिका रही है। गुरूकुलीय शिक्षा के कारण समाजनिष्ठा आपके व्यक्तित्त्व में सन्निहित है। अतः ग्रामीण कृषकों के आर्थिक स्तर को उन्नत करने के लिए आपने गिरकचाल बांध की निर्मिति में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। इसी प्रकार निलंगा परिसर के सिंचन क्षेत्रयुक्त गन्ना उत्पादकों के लिए अंबुलगा (ता. निलंगा) स्थित **'शिवाजीराव पाटील सहकारी शुगर कारखाने'** की निर्मिति में आपका महत्त्वपूर्ण अवदान है। पत्रकारिता को लोकतंत्र का चतुर्थ स्तंभ कहा गया है। 'वैदिक गर्जना' के संपादक मंडल के सदस्य के रूप में आप अनुभवों से मार्गदर्शन तथा जनजागरण के कार्य में अपना सहयोग प्रदान कर रहे हैं। इसी प्रकार हिन्दी प्राध्यापकों के लेखन के लिए 'अप्रतिबद्ध' नामक शोध पत्रिका का भी आपने संपादन कार्य किया है। प्राध्यापक, संपादक, कृषिप्रेमी, क्रीडाप्रेमी के रूप में आप अपना सफल जीवनयापन कर रहे हैं। इस यात्रा में आपकी सहधर्मिणी सौ. विजया पाटील की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। आपकी परिवार लता पर तीन कलिकाएँ लहलहा रही हैं।

छत्तीस वर्ष की प्रदीर्घ सेवा के बाद आपने अवकाश प्राप्त किया। जीवन के अस्सी वसंत को आपने सफलता पूर्वक व्यतीत किये हैं। अशीति वर्षपूर्ति के अवसर 'वैदिक गर्जना' परिवार तथा आर्य जगत् आपके शारीरिक आरोग्य और दीर्घायु की सर्वशक्तिमान परमेश्वर से कामना करते हैं

जीवेत् शरदः शतम्।

- घर क्र.२ पशुपतिनाथ नगर, औसा रोड, लातूर मो.०९८८१२१५६१६

श्रद्धानन्द गुरूकुल फार्मेसी, परली

-लाभकारी औषधियां व यज्ञसामग्री उपलब्ध-

आर्य समाज परली द्वारा संचालित श्रद्धानन्द गुरूकुल फार्मेसी में चॅवनप्राश सहित अन्य प्रभावकारी आयुर्वेदिक औषधियां उपलब्ध हैं। विभिन्न वनस्पतियों तथा मौल्यवान पदार्थो के सम्मिश्रण योग से बनी ये औषधियां शारीरिक, मानसिक व बौद्धिक स्वास्थ्य के लिए अत्यंत लाभकारी हैं। अतः सभी से निवेदन है कि इन बहुगुणी औषधियों को खरीदकर स्वास्थ्य लाभ उठावें। साथ ही हवन के लिए विभिन्न जडी बुटियों से संमिश्रित **'यज्ञ सौरभ'** यह सुगन्धित सामग्री भी बनाई गयी है। अतः इन औषधियों आज ही मंगवायें

संपर्क- वैद्य विलास बनसोडे (फार्मेसी प्रमुख) मो. ९०११६०४६११

www.thearyasamaj.org

पुरोहित शिविर को अपूर्व सफलता

'पुरोहित वर्ग समाज व राष्ट्र का पथपदर्शन करें' - स्वामी श्रद्धानंदजी

'वेदप्रतिपादित सोलह संस्कारों में ही मानव का सम्पूर्ण विकास निहित हैं। अतः आर्य समाज के विद्वान पुरोहितों का आद्य कर्तव्य है कि वे इन संस्कारों के विशुद्ध स्वरूप को जन-जन तक पहुचाये और श्रद्धा, निष्ठा व अपने आदर्श व्यक्तित्त्व द्वारा राष्ट्र व समाज के नवनिर्माण में अपना अमूल्य योगदान देवें,' **यह विचार महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि** सभा के प्रधान स्वामी श्रद्धानन्दजी ने लातूर में व्यक्त किये।

प्रान्तीय सभा द्वारा लातूर शहर के गांधी चौक, रामनगर तथा स्वाधीनता सैनिक कालोनी इन विभागों की तीनों आर्य समाजों के संयुक्त तत्वावधान में गत १ से ७ जुलाई के दौरान बारहवा **राज्यस्तरीय पुरोहित प्रशिक्षण शिविर** सोत्साह सम्पन्न हुआ। इस शिविर के समापन समारोह सत्र में अध्यक्षीय उद्‌बोधन देते हुए स्वामीजी उपरोक्त वक्तव्य दे रहे थे। इस अवसर पर सभामन्त्री राजेन्द्रजी दिवे, प्रमुख प्रशिक्षक पं. राजवीरजी शास्त्री, पं. सुधाकरजी शास्त्री,पं. प्रतापसिंहजी चौहान, योगप्रशिक्षक श्री व्यंकटेशजी हालिंगे तथा तीनों आर्य समाजों के पदाधिकारी आदि मंच पर उपस्थित थे। इस शिविर में लगभग ४० प्रशिक्षणार्थियों बडे उत्साह के साथ भाग लिया। तीनों आर्य समाजों के कार्यकर्त्ताओं ने एकजूट होकर आदर्श दिनचर्या, सुयोग्य व्यवस्थापन आदि के माध्यम से इस शिविर को सफल बनाया। गांधी चौक आर्य समाज के श्रीमती प्रमिलादेवी सभागृह में सात दिनों तक उपरोक्त प्रशिक्षक पंडित सोलह संस्कार, नित्य नैमित्यिक यज्ञ तथा अन्य पंचमहायज्ञादि प्रक्रियाओं का प्रशिक्षण देते रहे। प्रातः से लेकर रात्रिं तक के व्यस्त कार्यक्रमों में लगभग पांच सत्र चलते रहें। प्रातः एवं सायं यज्ञानुष्ठान, भजन, प्रवचन से प्रशिक्षणार्थियों को अध्यात्मज्ञान का लाभ होता रहा। सभा के आर्यवीरदल अधिष्ठाता श्री व्यंकटेशजी हालिंगे सबेरे व्यायाम, आसन व प्राणायाम सत्र चलाते रहे, जिससे सम्मिलितों को काफी स्वास्थ्यलाभ हुआ। निवृत्त अध्यापक, प्राध्यापक, शासकीय, कर्मचारी, व्यापारी, किसान, विद्यार्थी, वानप्रस्थी, महिला-पुरूष आदि इस शिविर में सम्मिलित थे। शिविर के दौरान सर्वश्री डॉ.ब्रह्ममुनिजी, लक्ष्मणराव आर्य, डॉ. नयनकुमार आचार्य आदियों ने भी शिविरार्थियों को मार्गदर्शन किया।

समापन सत्र में प्रमुखातिथि के रूप में वरिष्ठ आर्य कार्यकर्त्ता सर्वश्री ओमप्रकाशजी पाराशर, शंकरराव मोरे

www.thearyasamaj.org

उपस्थित थे । समारोह की प्रस्तावना सभामंत्री राजेन्द्र दिवे ने रखी । प्रशिक्षणार्थियों में से सर्वश्री राम सनातन, श्रीराम आर्य, दत्ता मुळे, श्रीमती मैत्रेयी यति, श्रीमती कमलबाई झंवर, श्रीमती इंन्दुमति वानप्रस्थी, ब्र. चैतन्य फड आदियों ने अनुभव कथन किये । पं. राजवीरजी शास्त्री ने कहा- 'पुरोहित यह राष्ट्र का प्राण होता है, राजा से बढकर उसका महत्व अधिक है।' पं. सुधाकरजी ने कहा- 'नये पुरोहित व विद्वानों की बढती संख्या के कारण महाराष्ट्र भूमि में अधिक प्रचार हो सकता है।' समारोह में विद्वानों को भी सम्मानित किया गया तथा सुयोग्य प्रशिक्षणार्थियों को पुरस्कार व सभी पुरोहितों का प्रमाणपत्र वितरीत किये । हैदराबाद से पधारे आर्यसेवी कार्यकर्त्ता श्री एम. बालराज आर्य ने विद्वानों का अभिनन्दन किया । श्रीमती सावंत ने भजनों की पुस्तकें तथा पं. ज्ञानकुमारजी आर्य ने पंचमहायज्ञ ग्रन्थों के सेट सभी प्रशिक्षणार्थियों को भेट किये।

समारोह का संचालन आर्य समाज गांधी चौक, लातूर के मन्त्री प्रा.श्री शरच्चंद्रजी डुमणे ने किया तथा धन्यवाद प्रस्ताव सभामंत्री श्री राजेन्द्र दिवे व श्री ज्ञानकुमारजी आर्य ने रखा ।.

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभेच्या वतीने पू. पिताश्री स्व. विठ्ठलराव बिराजदार स्मृती

राज्यस्तरीय विद्यालयीन वक्तृत्त्व स्पर्धा २०१३

विषय :- 'महर्षी दयानंदांच्या विचारानीच देश भ्रष्टाचारमुक्त होऊ शकतो'

रविवार, दिनांक २४ नोव्हेंबर २०१३, वेळ :- सकाळी ११.०० वाजता

स्थळः आर्य समाज, परळी-वैजनाथ जि.बीड

— स्पर्धेचे नियम व अटी —

१) या स्पर्धेत केवळ माध्य. विद्यालयाच्या (इयत्ता ८,९,१० वी वर्गाच्या) विद्यार्थ्यांना भाग घेता येईल.

२) या स्पर्धेसाठी प्रत्येक विद्यालय किंवा आर्य समाज जास्तीत जास्त ३ स्पर्धक पाठवू शकतील.

३) प्रत्येक स्पर्धकास मराठी/हिंदी भाषेतून बोलण्यासाठी फक्त ८ (६+२) मिनीटे वेळ दिला जाईल.

४) स्पर्धा संघाचा प्रवेश अर्ज व प्रवेश शुल्क रु. ५०/- दि. २० नोव्हेंबर २०१३ पर्यंत "संयोजक, स्व. विठ्ठलराव बिराजदार स्मृति विद्यालयीन वक्तृत्व स्पर्धा, आर्य समाज, परळी-वैजनाथ ४३१५१५ जि.बीड या पत्त्यावर पाठवावे.

५) स्पर्धक विद्यालयातर्फे येणार असतील तर त्यांनी मुख्याध्यापकांचे पत्र व ओळखपत्र आणावे अथवा ते आर्य समाजामार्फत येणार असतील तर त्यांनी तेथील पदाधिकाऱ्यांचे पत्र सोबत आणावे.

६) स्पर्धकांनी येण्या-जाण्याचा खर्च स्वतः करावा. भोजन व निवासाची व्यवस्था आर्य समाज, परळी-वैजनाथ तर्फे करण्यात आली आहे.

७) यापूर्वीच्या स्पर्धेतील पारितोषिक प्राप्त विजयी स्पर्धकांनाही या स्पर्धेत भाग घेता येईल.

८) पारितोषिके अ) प्रथम - रु. १५००/-, ब) द्वितीय रु. ११००/-, क) तृतीय रु. ७५१/- (तिघांना रु. १०० चे वैदिक साहित्य) ड) सर्व स्पर्धकांना प्रमाणपत्रे व वैदिक साहित्य भेट.

निवेदक - महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभा व आर्य समाज, परळी-वैजनाथ

www.thearyasamaj.org

शोक समाचार समाजसेवी डॉ.दाभोलकर की हत्या

धार्मिक अन्धविश्वासों व पाखण्डों के खिलाफ संघर्ष करनेवाले आर्य समाज सहित देश के अन्य सेवाभावी सुधारवादी संगठनों तथा समाजहितैषी कार्यकर्त्ताओं के प्रयासों को तब जबरदस्त झटका लगा, जब महाराष्ट्र अन्धश्रद्धा निर्मूलन समिति के कार्याध्यक्ष डॉ. नरेन्द्र दाभोलकरजी की पुणे में क्रूरतम हत्या हुई। गत दि. २० अगस्त को प्रभातवेला में ७.३० बजे डॉ. दाभोलकर पुणे के ओंकारेश्वर मन्दिर के समीपस्थ महर्षि शिन्दे पूल पर प्रातर्भ्रमण कर रहे थे, तभी पीछे से बाईकपर संवार दो पिस्तौलधारी अज्ञात व्यक्तियों ने उनपर गोलियां बरसाई और वे कुछही क्षणों में गतप्राण हुए।

डॉ. नरेंद्र दाभोलकर समाज में ईश्वर व धर्म के नाम पर फैलते जा रहे अंधविश्वासों, कुरीतियों व आडंबरों के विरूद्ध संघर्ष कर रहे थे। देवी-देवताओं के नामपर प्रचलित नरबलि, पशुहत्याएं, मंत्रजाल, जादुटोना, चमत्कार, भूतबाधा आदि अनिष्ट परम्पराओं के विरूद्ध उन्होंने जमकर आवाज उठाई थी। वैज्ञानिक दृष्टिकोन के माध्यम से समाज जागृत हो तथा सामान्य जनता पाखण्डवाद से बची रहे, इस उद्देश्य से वे अपने संगठन अनिस. व सहयोगियों के साथ सक्रिय थे।

यद्यपि आर्य समाज की आध्यात्मिक विचारधारा व वैदिक सिद्धांतों को लेकर मतभेद थे, फिर भी समाज में व्याप्त अंधविश्वास, कुरीतियों व जातिवाद को समाप्त करने के विषय पर काफी साम्यता व अनुकूलता थी। ऐसे सुधारवादी व्यक्तित्त्व की हत्या से सामाजिक क्षेत्र की हानि हुई है। स्व.डॉ.श्री नरेन्द्र दाभोलकरजी को आर्य जगत की ओर भावभीनी श्रद्धांजली !

* आर्य समाजों का धन्यवाद *

प्रान्तीय सभा के निर्देशानुसार दी गयी तिथियों पर राज्य की सभी आर्य समाजों ने अपने-अपने श्रावणी वेदप्रचार उत्सव मनायें। परमात्मप्रदत्त वेदवाणी की ज्ञानधारा को अपने गांव, शहर व परिसर में फैलाया। कार्यक्रमों का प्रचार, सुव्यवस्थित नियोजन, धन (दान) संकलन, श्रोताओं से अनुरोध, बाहर सार्वजनिक स्थानों,स्कूल व कॉलेजों के कार्यक्रमों का नियोजन, यज्ञ की तैयारी, विद्वानों के निवास व भोजन की व्यवस्था, उनका सम्मान आदि सभी बातों के लिए आप सभी म.दयानंद के अनुयायियों व वैदिक धर्मियों को काफी मेहनत उठानी पड़ी। अपने व्यक्तिगत कार्यों की उपेक्षा कर मानवमात्र को वेदज्ञान प्रदान करने के उद्देश्य से आपने यह सब किया। एतदर्थ आप सभी के मनःपूर्वक धन्यवाद व आभार !

आभारोत्सुक-**महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा**

www.thearyasamaj.org

।। कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ।।

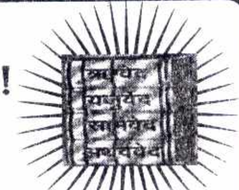

वेदों की ओर लौटो !

वेद प्रतिपादित मानवीय
जीवन मूल्यों को
जन-जन तक पहुँचाने हेतु
कार्यतत्पर सशक्त एवं समर्थ प्रान्तीय आर्य संगठन

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा

(पंजीयन-एच. ३३३/र.नं.६/टी.इ. (७) १६७/१०४९, स्थापना ५ मार्च १९७७)

- मानवकल्याणकारी उपक्रम -

- 'वैदिक गर्जना' मासिक मुखपत्र
- आर्य समाज दिनदर्शिका
- पू. हरिश्चन्द्र गुरूजी गौरव-'मानवता संस्कार एवं आर्यवीरदल शिविर'
- आर्य कन्या वैदिक संस्कार शिविर
- पातञ्जल ध्यानयोग शिविर
- प्रान्तीय आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर
- पुरोहित प्रशिक्षण शिविर
- मानव जीवनकल्याण वेद प्रचार (श्रावणी) उपाकर्म अभियान
- स्व. विठ्ठलराव बिराजदार स्मृति विद्यालयीन राज्य. वक्तृत्व स्पर्धा
- सौ. तारादेवी जयनारायणजी मुंदडा विद्यालयीन राज्य.निबंध स्पर्धा
- सौ. कलावतीबाई व श्री मन्मथअप्पा चिल्ले (आनन्दमुनि) महाविद्यालयीन राज्य. वक्तृत्व स्पर्धा
- विद्यार्थी सहायता योजना
- सौ.डॉ. विमलादेवी व श्री डॉ.सु.ब.काले (ब्रह्ममुनि) महाविद्यालयीन राज्य. निबन्ध स्पर्धा
- स्व.पं. रामस्वरूप लोखण्डे स्मृति संस्कृत राज्य प्रतियोगिताएं
- मानवजीवन निर्माण अभियान - विद्यालय व महाविद्यालयों के लिए (वैदिक व्याख्यानमाला)
- शान्तिदेवी मायर स्मृति मानवनिर्माण एवं सेवा योजना
- स्व. भसीन स्मृति एवं मायर गौरव स्वास्थ्य रक्षा एवं चिकित्सा शिविर
- शान्तिदेवी मायर विधवा सहायता योजना
- वैदिक साहित्य भेट योजना
- पंथ-जातिप्रथा निर्मूलन अभियान
- वैदिक साहित्य प्रकाशन योजना
- आपत्कालीन सहायता योजना
- पर्जन्यवृष्टि यज्ञ अभियान
- गौ-कृषि सेवा योजना
- स्वा.सै.श्री गुलाबचंदजी लदनिया गौरव राज्य योगासन प्रतियोगिता
- सौ.धापादेवी गु. लदनिया गौरव राज्य प्राणायाम प्रतियोगिता

www.thearyasamaj.org

॥ ओ३म् ॥

माझ्या मराठीचा बोलु कवतिके। परि अमृतातेही पैजेसीं जींके ।
ऐसी अक्षरेंचि रसिकें । मेळवीन ॥ (संत ज्ञानेश्वर)

मराठी विभाग

उपनिषद सन्देश — सृष्टीचा उत्पत्ती, स्थिती व लयकर्ता परमेश्वर

यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते येन जातानि जीवन्ति ।
यत्प्रयन्त्यभिसंविशन्ति तद्विजिज्ञासस्व तद् ब्रह्म ॥(तैत्तिरीयोपनिषद)

ज्या परमपिता परमेश्वराच्या निर्माण कार्यामुळे या सृष्टीतील पृथ्वी,आप, तेज, इत्यादी पंचमहाभूते उत्पन्न होतात, ज्याच्यामुळे जगतात आणि ज्याच्यामध्ये विलीन होतात, तो एकमेव ब्रह्म आहे. त्यालाच जाणण्याची, समजण्याची व अनुभवण्याची इच्छा धरावी. अर्थात तो परब्रह्म या समग्र ब्रह्मांडातील जड व चेतन तत्वांचा उत्पत्ती, स्थिती व लयकर्त्ता आहे.

दयानंदांची अमृतवाणी

संस्कृत भाषेतच वेदज्ञान

परमेश्वराने जर काय कोणत्याही देशाच्या भाषेत वेदज्ञानाच प्रकाश केला असता, तर तो ईश्वर पक्षपाती ठरला असता. कारण एखाद्या देशाच्या भाषेत तो प्रकाश झाला असता, तर त्याला त्या देशातील लोकांना समजावयास सोपे झाले असते व अन्य विदेशी लोकांना शिकणे अवघड झाले असते. यासाठी संस्कृत भाषेतच वेदज्ञान प्रकाशित झाले आहे. ही भाषा कोण्या एका देशाची भाषा नव्हें. आणि वेदांची भाषा ही तर सर्वभाषांची मुळ कारण आहे. म्हणूनच संस्कृत भाषेत वेदांचा प्रकाश झाला आहे. ज्याप्रमाणे ईश्वराची पृथ्वी, अग्नी इत्यादी सृष्टितत्त्वे सर्वदेश व देशवासियांसाठी एकसारखी आहेत व ते सर्व सर्वशिल्पविद्यांचे कारण आहे, त्याचप्रमाणे परमेश्वरांच्या विद्येची भाषा सुद्धा एकच असावयास हवी. त्यामुळे सर्वदेशवासियांना शिकण्यांत व शिकविण्यात एकसारखेच परिश्रम घ्यावे लागत असल्याने ईश्वर हा पक्षपाती होऊ शकत नाही.

त्याबरोबरच सर्वभाषांचे कारण देखील तोच आहे.

(सत्यार्थ प्रकाश ग्रंथातील सातवा समुल्लास)

www.thearyasamaj.org

दिल्लीत राष्ट्रोध्दाराची योजना

- डॉ. भवानीलाल भारतीय

इ.स. १८७७ च्या जानेवारी महिन्यात स्वामीजी दिल्लीला आले. या वर्षाच्या सुरूवातीला भारताचे व्हाईसराय लॉर्ड लिटन यांनी महाराणी व्हिक्टोरिया यांना **भारताची सामाज्ञी** ही पदवी बहाल करण्याच्या उद्देश्याने एका मोठ्या सत्कार समारंभाचे आयोजन केले होते. या कार्यक्रमात विविध संस्थानांचे राजे, नवाब, प्रतिष्ठित लोक व गर्भश्रीमंत अशा सेठ व सावरकारांना आमंत्रित करण्यात आले होते. दिल्लीतील या मोठ्या सत्कार सोहळ्याची माहिती जेव्हा स्वामीजींनी समजली, तेंव्हा त्यांनी आपल्या विचारांच्या प्रचाराकरिता हा कार्यक्रम म्हणजे एक चांगली संधी असल्याचे हेरले. जानेवारीच्या प्रारंभीच ते दिल्लीत पोहोचले आणि शेठ बालमुकुंद केसरीचंद यांच्या बागेत त्यांनी आपले बस्तान मांडले. जिज्ञासू लोक विचारविनिमयासाठी येथे यावेत म्हणून त्यांनी त्या ठिकाणी **निवासस्थान दयानंद सरस्वती** अशा शीर्षकाची पाटी लावली. याचवेळी स्वामीजींनी देशातील प्रमुख विचारवंतांचे, तत्वचिंतकांचे व राष्ट्राच्या विकासासाठी प्रयत्नशील असलेल्या लोकांचे एक संमेलन बोलाविले. जेणे करून आमंत्रित सर्व मंडळी आपसांत मिळून-मिसळून देशाच्या पूर्ण हितासाठी व कल्याणासाठी एखादी सर्वसमावेशक योजना तयार करू शकतील. स्वामीजींच्या आग्रहावरून पंजाबमधील ब्राह्मो समाजाचे नेते बाबू नविनचंद्र रॉय, नवपरिवर्तनवादी ब्राह्मो समाजाचे संस्थापक केशवचंद्र सेन, मुंबईचे हरिश्चंद्र चिंतामणी, मुरादाबादचे मुंशी इंद्रमणी, तसेच भारतातील मुस्लीम जनजागरण अभियानाचे अग्रदूत

www.thearyasamaj.org

सर सय्यद अहमदखां यांच्या व्यतिरिक्त पंजाबचे क्रांतिकारी लेखक मुंशी कन्हैयालाल अलखधारी इत्यादी एकत्र आले. बराच वेळ विचारविनिमय होऊन सुद्धा हे सर्व नेते देशहितासाठी कोणताही एक समान असा कार्यक्रम आखू शकले नाहीत. या संमेलनाच्या असफलतेने स्वामीजींना थोडेसे नैराश्य आले. पण याच दरम्यान त्यांना पंजाबला येण्याचे निमंत्रण आले. स्वामीजींची अशी धारणा होती की इतर राज्यातील लोकांपेक्षा पंजाबचे लोक अधिक प्रगत व नव्या विचारांना स्वीकारण्यात फारच उत्साही दिसून येतात. म्हणूनच त्यांचा हा आशावाद बळावला की यामुळे तर पंजाब राज्य हे त्यांच्या विचारांना उन्मुक्तभावनेने स्वीकारेल !

('दयानंद चित्रावली'चा मराठी अनुवाद)

-३/५, शंकर कॉलनी, श्रीगंगानगर (राज.)

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभे तर्फे

सौ. कलावतीबाई व श्री मन्मथअप्पा चिल्ले गौरव राज्यस्तरीय महाविद्यालयीन वक्तृत्त्व स्पर्धा २०१३

*** रविवार, दिनांक १५ डिसेंबर २०१३, वेळ :- सकाळी ११.०० वाजता ***

विषयः- वाढत्या स्त्री अत्याचारावर महर्षी दयानंदांचे प्रभावी उपाय

स्थळः आर्य समाज, परळी-वैजनाथ जि.बीड

१) या स्पर्धेत कनिष्ठ व वरिष्ठ (११ वी ते पदवी) महाविद्यालयाच्या विद्यार्थ्यांना भाग घेता येईल.
२) या स्पर्धेसाठी प्रत्येक महाविद्यालय किंवा आर्य समाज जास्तीत जास्त ३ विद्यार्थी पाठवू शकतील.
३) प्रत्येक स्पर्धकास मराठी/हिंदी भाषेतून बोलण्यासाठी फक्त ८ (६+२) मिनीटे वेळ दिला जाईल.
४) स्पर्धा संघाचा प्रवेश अर्ज व प्रवेश शुल्क रु. ५०/- दि. १२ डिसेंबर २०१३ पर्यंत "संयोजक, सौ. व श्री चिल्ले राज्य. महाविद्या. वक्तृत्व स्पर्धा, आर्य समाज", परळी -वै. च्या त्त्यावर पाठवावे.
५) स्पर्धक महाविद्यालयाचे असतील तर प्राचार्यांचे पत्र व ओळखपत्र सोबत आणावे अथवा ते आर्य समाजाचे असतील तर त्यांनी त्या आर्य समाजाच्या मंत्री किंवा प्रधानांचे पत्र सोबत आणावे.
६) स्पर्धकांनी येण्या-जाण्याचा खर्च स्वतः वहन करावा. निवास व भोजनाची व्यवस्था आर्य समाज, परळी-वै. तर्फे करण्यात आली आहे. ७) मागील स्पर्धेतील विजयी स्पर्धकांना या स्पर्धेत भाग घेता येईल. ८) स्पर्धेची पारितोषिके अ) प्रथम - रु. २०००/-, ब) द्वितीय रु. १५००/-क) तृतीय - रु. १०००/- (प्रत्येकी रु. १०० चे वैदिक साहित्य) ड) सहभागींना प्रमाणपत्रे व वैदिक साहित्य.

निवेदक- महाराष्ट्र आर्य प्र. सभा, व आर्य समाज, परळी-वैजनाथ-

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा

***** *त्रैमासिक अन्तरंग बैठक* *****

सभा के अन्तरंग सदस्यों को सूचित किया जाता है कि सभा की त्रैमासिक अन्तरंग बैठक आगामी दि. २२/९/२०१३ (रविवार) को प्रातः ११ बजे **आर्य समाज देगलूर** जि.नांदेड में आयोजित की गई है। अतः सभी अन्तरंग सदस्य उपस्थित रहे।

निवेदक- राजेन्द्र दिवे (मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा)

www.thearyasamaj.org

आदि वेदमाऊली, देई सर्वभूतां सावली

(वेदमंत्रांचा प्राकृत मराठी ओवीबद्ध अनुवाद)

(ऋग्वेद-प्रथम मंडल, तृतीय सूक्त, मंत्रसंख्या १२, ओवीसंख्या १८)

पद्यानुवादक-संभाजी पवार (घटांग्रेकर)

अश्विना यज्वरीरिषो द्रवत्पाणी शुभस्पती । पुरूभुजा चनस्यतम् ॥१॥

हे विद्याकांक्षी मानव श्रेष्ठी । शीघ्र वेगप्राप्तीसाठी ।
उत्तम व्यवहार सिद्धीसाठी । पदार्थविद्या अभ्यासावी ॥१॥
शुभगुण प्रकाश पालनार्थ । खाद्य पेय पदार्थ दानार्थ ।
शिल्पविद्या संबंध कारणार्थ । जोडी जोडावी जल-अग्नीची ॥२॥
अन्नसम प्रीतीभावे । हस्त कौशल्य संपादावे ।
स्व-परउपकार साधावे । सुखी करावे सर्वजन ॥३॥

अश्विना पुरूदंससा नरा शवीरया धिया । धिष्ण्या वनतं गिरः ॥२॥

मध्यम पुरूष प्रयोगे अग्निजल गुण प्रगटन । निरूक्तकारे अश्विने शब्दे केले कथन ॥२॥
परि हा विशेष अभिप्राय न जाणून । झाले विपरीतार्थी सायनविलसनादि ॥३॥
तरी हा विशेष अभिप्राय समजून । कारागिरे करावी शिल्पविद्याजतन ।
शीघ्रगामी वाणी, नौका, विमानादि साधन । निर्मिती सदा करावी ॥५॥

दस्त्रा युवाकवः सुता नासत्या वृक्तबर्हिषः । आ यातं रूद्रवर्तनी ॥३॥

सर्व विद्वान मनुष्यांनी ! जलाग्नी जोडीचा यथोपयोग करूनी ।
शिल्प विद्येने दुःख निवारूनी । सुख प्राप्ती करावी ॥६॥

इंद्रा याहि चित्रभानो सुता इमे त्वायवः । अण्वीभिस्तना पूतासः ॥४॥

परमेश्वर व सूर्याचे जे जे गुणकर्म असती ।
ते ते जाणुन करावी परमार्थ व्यवहार सिद्धी प्राप्ती ।
ऐसा उपदेश परमेश्वर करती । श्लेषालंकारे या मंत्रे ॥७॥

इंद्रा याहि धियेषितो विप्रजूतः सुतावतः। उप ब्रह्माणि वाघतः ॥५॥

जो असे कार्य जगताचा उंत्पत्ती कर्ता । तो आदि कारण ईश्वरपरमपिता ।
शुद्ध बुद्धि विज्ञाने येई अनुभूता । सर्व मनुष्यमात्रा निश्चयेसी ॥८॥

इंद्रा याहि तुतूजान उपब्रह्माणि हरिवः । सुते दधिष्व नश्चनः ॥६॥

जो शरीरी असे प्राणप्रिय । खाणे-पिणे-पचन-ग्रहण-त्यागादि कर्मी सक्रिय ।
रक्ताभिसरणादि कामी शरीरी सक्रिय । शरीर पुष्टि व नाशास कारण तोच असे ॥९॥

www.thearyasamaj.org

ओमासश्चर्षणीधृतो विश्वे देवास आ गत । दाश्वांसो दाशुषः सुतम् ॥७॥

ईश्वर आज्ञापितो विद्वत् जना । विद्यालयी देश देशांतरी करून भ्रमणा ।
विद्याधर्म श्रेष्ठ शिक्षण द्यावे सर्वजना । सुखी व्हावे सदैव सुकर्मे ॥१०॥

विश्वे देवासो अप्तुरः सुतामा गन्त तूर्णयः । उस्त्रा इव स्वसराणि ॥८॥

उपमालंकारे ईश्वर आज्ञावी विदवत्जना । जैसा सूर्यप्रकाश ऊर्जा पुरवी सर्वजना ।
तैसेचि विद्वाने शिकवावे विद्यादिशुभगुणा । व शुभकर्म करून व्हावे सुखी ॥११॥

विश्वे देवासो अस्त्रिध एहिमायासो अद्रुहः। मेधं जुषन्त वह्नयः ॥९॥

विद्रोह व परनाशा कदा न करावे । ज्ञानवान व कर्मशील बनुन राहावे
सर्वमानवा सदैव विद्या सुख दयावे । ही ईश्वराज्ञा पाळावी विद्वतजने ॥१२॥

पावका नः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती । यज्ञं वष्टु धियावसुः ॥१०॥

सर्वांनी ईश्वर प्रार्थनेत व्हावे मग्न । सत्य विद्या व सत्कर्म करावे कौशल्य संपादून ।
मिळवावे सर्वोपकारी सरस्वती ज्ञान । हाच वेदोपदेश असे सर्वजना ॥१३॥

चोदयित्री सुनृतानां चेतन्ती सुमतीनाम् । यज्ञं दधे सरस्वती ॥११॥

जी असे छल कपटादि दोष रहित वाणी । तीच जाणावी सत्योपदेशकारी यथार्थवाणी ।
तीच असे सर्वोपकारी आप्तपुरूष वाणी । ती अविद्वानांची कदापि नोहे ॥१४॥

महो अर्णः सरस्वती प्र चेतयति केतुना । धियो विश्वा वि राजति ॥१२॥

हा वेदमंत्र असे भारी थोर । यात वाचकोपमेय लुप्तोपमालंकार ।
जसा वायुतरंगतीत व सूर्य प्रकाशीत सागर । स्वरत्ने व तरंगे भरला असे ॥१५॥
तैसाचि वेदशब्दरूपी महासागर । असे सत्यज्ञान विद्यांचे भांडार ।
यथार्थ बुद्धीची वाढ करणार । साधारण मानव मात्रांची ॥१६॥

द्वितीय सूक्ताची संगती असे तृतीय सुक्ती । पण सायनाचार्य मते शब्द सरस्वती ।
देहधारी देवता व नदी ऐसे म्हणती । ते सर्वस्वी विपरीत त्याजे जाणा ॥१७॥
तैसेची पाश्चात्य विलसनादि अविद्वान् । या सर्वाचे कल्पित अज्ञान ।
असे सर्वथा विपरीत ज्ञान । म्हणूनि सर्वस्वी त्यजावे ॥१८॥

-मु.पो.घटांग्रा
ता.गंगाखेड,जि.परभणी
(व्हाया-राणी सावरगाव)

www.thearyasamaj.org

संगतिकरण : यज्ञाचे प्रमुख लक्षण

- ज्ञानकुमार आर्य

देवपूजा, संगतिकरण आणि दान हे यज्ञ शब्दाचे तीन अर्थ सांगितले आहेत. देवपूजा आणि दानानेच संगतिकरण साध्य होते. संगतिकरण म्हणजे काय ? संगतिकरण हा शब्द सम्+गति + कृ पासून बनला आहे. संगति म्हणजे संयोग, भेट, सहवास, पूर्वापार संबंध, जुळणी, संगत, मैथुन, ज्ञान, व सहयोग तर करण म्हणजे करणे, कृत्य, साधन, कारण हेतू इत्यादी.

ह्या अर्थाचा विचार करता संगतिकरण म्हणजे संयोग करणे, भेट करणे, सहवास करणे, जुळणी करणे, उत्पत्ती करणे इत्यादी ! यज्ञ म्हणजे जड चेतन सृष्टीच्या पोषणाचे, उन्नतीचे व कल्याणाचे सर्वोत्तम कर्म होय. या दृष्टीने व्यष्टीपासून समष्टीपर्यंत, अमिबापासून डायनासोरादी विशालकाय प्राण्यांपर्यंत आणि सूक्ष्म अणुरेणूंपासून अतिविस्तृत ब्रह्मांडापर्यंत जेवढी म्हणून जुळणीची, एकत्र करण्याची, उत्पत्तीची, सहयोगाची, ज्ञानाची संघटनात्मक कार्ये आहेत, ती सर्व संगतिकरण म्हणजेच यज्ञ या संज्ञेत समाविष्ट होतात. म्हणूनच संगतिकरणास यज्ञाचे प्रमुख लक्षण म्हटले आहे. संघटनात्मक स्वरूपाच्या ह्या संगतिकरण यज्ञाचे विस्तारित रूप पुढील प्रमाणे दिसून येईल.

-सृष्टियज्ञातील संगतिकरण-

ह्या विशाल सृष्टीत अखंड स्वरूपात यज्ञकर्म चालू आहे. यज्ञकर्म हे एकट्याने (एका तत्वाने) पूर्ण होत नाही. त्यासाठी किमान दोघांची (दोन तत्वांची) आवश्यकता असते. सृष्टीतील पंचमहाभूतांच्या संगतिकरणामुळे-परस्पर संयोगामुळे प्रजापतीद्वारा उत्पत्ती, स्थिती व लयरूप यज्ञ चालत आहे. ब्रह्मांडातील ग्रह-गोल परस्परांतील आकर्षणामुळे एका निश्चित, स्थितीत व गतीत नियमाने फिरत आहेत. त्यांच्यातील संयोजन, संतुलन तसूभरही ढळत नाही. याप्रमाणेच सृष्टीत चालणारे ऋतुचक्र असेल, जलचक्र असेल किंवा गीतेत (३.१४) सांगितलेली यज्ञ-पर्जन्य-अन्न-प्रजा-यज्ञ ही जड-चेतनांची एकमेकांस कांही देण्याची संगतिकरणरूपी साखळी असेल, अशा प्रत्येक ठिकाणी निसर्गातील कर्मयज्ञाच सातत्य दिसून येते.

-पंचमहायज्ञातील संगतिकरण-

मानवांसाठी सांगितलेल्या कर्तव्यकर्मरूपी पंचमहायज्ञांमध्ये सुद्धा हे संगतिकरणाचे तत्त्व व्यापून राहिलेले आहे. ब्रह्मयज्ञात (संध्येत) आत्मा-परमात्मा यांचे सान्निध्य आहे. प्राणायामांमध्ये श्वास-प्रश्वासांची संगती

www.thearyasamaj.org

आहे. स्वाध्यायात आत्मा, मन, बुद्धी, नेत्र व ग्रंथ यांच्यात संगतिकरण आहे.

देवयज्ञात यजमान, ऋत्वज (पुरोहित), श्रोते, दर्शक, हविद्रव्य व यज्ञपात्रादींचे संगतिकरण आहे. यांची योग्य जुळवाजुळव, संयोजन झाल्यानेच यज्ञ पूर्ण होतो. यज्ञातील अग्नी व हविद्रव्य यांच्या संगतिकरणामुळे, एकत्र येण्यामुळे जड देवतांचे पोषण होते. जड देवतांपासून यज्ञकर्ते प्रकाश, उष्णता, सौम्यता इ. गुण घेतात. पितृयज्ञ व अतिथियज्ञामध्ये चेतन देवतांना अन्नवस्त्रादी सुखसाधने देऊन प्रसन्न व सुखी ठेवले जाते आणि त्यांच्या संगतीत राहून त्यांच्या उत्तम चारित्र्यापासून आपलेही चारित्र्य उत्तम बनविले जाते. अशा प्रकारे जड-चेतनांचे हे परस्परांच्या देवाण-घेवाणीचे संगतिकरणाचे कार्य चालते.

बलिवैश्वदेवयज्ञ हा परोपकार व कृतज्ञतेच्या भावनेने केला जाणारा यज्ञ आहे. सृष्टीतील अनेक जीवजंतू, लहान-मोठे पशु-पक्षी इ. मानवांसाठी अनेक प्रकारची उपकारक कर्मे करतात. मधमाशा, फुलपाखरे, भुंगे इ. परागीभवनास मदत करतात. त्यामुळे धान्य व फळे मिळतात. मधमाशांपासून मध मिळतो. कुत्रा घराची राखण करतो. मांजरे उंदरांना भक्षण करून आपल्या अन्न-वस्त्रांचे, ग्रंथादींचे रक्षण करतात. गाई-म्हशी दूध देऊन शेतीसाठी उपयोगी पशू देतात. गाढव-घोडे इ.द्वारा वाहतुकीस मदत होते. मुक्या प्राण्यांच्या ह्या उपकारक कार्याची परतफेड म्हणून बलिवैश्वदेवयज्ञ केला जातो. मानव व प्राणी यांच्यातील हे संगतिकरण परस्परांना निश्चितच सुखी बनविते.

-गृहस्थयज्ञातील संगतिकरण-

ब्रह्मचर्य, वानप्रस्थ व संन्यास या तीन आश्रमांचे भरण-पोषण करण्यासाठी व वंशसातत्यासाठी विवाहाच्या माध्यमातून स्त्री-पुरूष एकत्र येऊन गृहस्थयज्ञ चालवतात. मैथुनाशिवाय किंवा पिंडांच्या संयोगाशिवाय प्रजा निर्माण होत नाही. घरात पती-पत्नी, मुले व इतर नातलग यांच्या आचरणात योग्य ताळमेळ असेल, परस्पर सहयोग, आपुलकी, आत्मीयता, मधुर व्यवहार, कर्तव्यदक्षता, उद्योग, पुरूषार्थ, देखभाल इ. असेल, तरच ह्या गृहस्थयज्ञापासून स्वर्गीय सुख मिळेल. अन्यथा यांच्यात संगतिकरणाचा अभाव असेल, तर त्या घराचे नरकात रूपांतर होण्यास वेळ लागत नाही.

-शरीरांतर्गत अवयवांचे संगतिकरण-

शरीरातील हात, पाय, डोके, कान, नाक, तोंड, पोट इ. अवयवांमध्ये संगतिकरणरूपी यज्ञ सुरळीतपणे चालू राहिला, तरच शरीराचे आरोग्य चांगले राहून माणूस सुखी व दीर्घायुषी होऊ शकतो. जेवणे, झोपणे, उठणे यांच्या वेळा निश्चित असणे, आसन-प्राणायाम व नियत कार्य यांच्यात नियमितपणा

www.thearyasamaj.org

असणे, भूक राखून भोजन करणे, शरीरावयांची स्वच्छता व पवित्रता राखणे इ. सर्वच बाबतीत हे संयोजन, नियोजन, दक्षता आवश्यक आहे. मनाला स्वैर सोडून इंद्रियांचे लाड पुरविले, तर त्याचे दुष्परिणाम भोगावेच लागतील.

-समाजातील संगतिकरण-

मनुष्य हा समाजशील प्राणी आहे. तो समाजाशिवाय एकट्याने जगू शकत नाही. ज्या समाजात राहायचे त्या समाजाशी मिळून-मिसळून, सहकार्याने व योग्य त्या आदराने वागले पाहिजे. समाजातील ज्ञानदानादी कार्य करणारा बुद्धिमान वर्ग, उद्योग-व्यापार करणारा वैश्य वर्ग, रक्षण, सुरक्षाव्यवस्था पाहणारा क्षत्रिय वर्ग-रक्षक वर्ग, सेवा-चाकरी करणारा सेवक वर्ग, रक्षण, सुरक्षाव्यवस्था पाहणारा क्षत्रिय वर्ग-रक्षक वर्ग, सेवा-चाकरी करणारा सेवक वर्ग या सर्वांमध्ये योग्य तो ताळमेळ असणे, संगतिकरण असणे समाजस्वास्थ्याच्या दृष्टीने गरजेचे आहे. कारण यज्ञीय भावना बाळगणाऱ्या मानवसमूहासच **'समाज'** असे म्हणतात.

-वेदोपनिषदांतील संगतिकरण-

वेद, उपनिषद, गीता इ. ग्रंथांमध्येही ह्या संगतिकरणरूपी यज्ञाचे विस्ताराने वर्णन केले आहे. ऋग्वेदातील संघटनसूक्तात म्हटले आहे की, 'तुम्ही सर्वांनी परस्पर प्रेमभावनेने एक व्हावे, प्रेममय मधुर बोलावे पूर्वजांनी अनुसरलेल्या मार्गाचे कर्तव्याचे पालन करावे. तुमची मने एक व्हावीत, तुमचे चित्त एक व्हावे, तुमच्या चिन्तन-मनन करण्याची जागा एक असावी, एकत्रितपणे तुम्ही ज्ञान घ्यावे, सर्वांनी संघटनेने यज्ञादी कार्ये करावीत. तुमच्या हृदयात एकता असावी. तुमचे संकल्प अविरोधी असावेत, तुमची मने प्रेमाने भरलेली असावीत व तुम्हा सर्वांना सुख लाभावे.'तैत्तिरीयोपनिषदातील (२.१) मंत्रही हाच एकतेचा उपदेश करतो-

'आम्ही सर्व स्त्री पुरूष, सेवक स्वामी, पिता-पुत्र मित्रादी मिळून उभयता प्रीतीने एकमेकांचे रक्षण करावे. सदा परस्परांशी प्रेमपूर्वक राहावे व पराक्रम करावेत. शिकलेले व न शिकविलेले ज्ञान अति प्रकाशमान व्हावे.' असे हे कुटुंबाचे, समाजाचे व राष्ट्राचे संघटन घडवून आणणारे, निसर्ग व मानवमात्रास शुद्ध व पवित्र करणारे संगतिकरणरूपी 'यज्ञकर्म' आपल्या हातून नेहमीच घडत रहावे,अशी सदिच्छा !

-सीताराम नगर, लातूर
मो. ९६२३८४२२४०

-महत्वाची सूचना-

सर्व आर्य कार्यकर्त्यांनी आप-आपल्या आर्य समाजांच्या श्रावणी कार्यक्रमांचे वृत्तांत प्रकाशनासाठी वैदिक गर्जना मासिकाकडे त्वरीत पाठवावेत.-संपादक

www.thearyasamaj.org

हैद्राबाद मुक्तिसंग्राम व आर्य समाज

-प्रा.देवदत्त तुंगार

१५ ऑगस्ट १९४७ रोजी भारताला स्वातंत्र्य मिळाले. हैद्राबाद संस्थान पोलिस अॅक्शन होऊन १७ सप्टेंबर १९४८ रोजी भारतात विलीन झाले व भारतीय स्वातंत्र्याला पूर्णता आली. भारताचे पोलादी गृहमंत्री सरदार वल्लभभाई पटेल यांनी सुमारे ६०० संस्थाने भारतात मोठ्या कौशल्याने विलीन केली, पण हैद्राबाद राज्य ताब्यात घेतांना निजामने व त्यांच्या समर्थकांनी खूपच खळखळ केली व भारतात सरकारला पोलिस अॅक्शन घ्यावी लागली. १४ सप्टेंबर ते १७ सप्टेंबर १९४८ पर्यंत लष्करप्रमुख जयंत चौधरी यांनी धाडसी कृती करून, रझाकारांचा बिमोड करून हैदराबाद संस्थान भारतात विलीन करून घेतले.

- भयंकर धर्मांधता-

हैद्राबाद संस्थान व त्यांचे निजाम शासक मुस्लिम धर्मांधतेचे प्रतीक होते. मुसलमान आणि हिंदू हे आपल्या शासनाचे दोन डोळे आहेत, अशी न्यायाची समानतेची व उदारमतवादाची भाषा संस्थानप्रमुख निजाम अधून मधून करीत असला तरी एकूण प्रशासनात व सार्वजनिक जीवनात मुस्लिम धर्मांधतेचे वर्चस्व होते. मराठी, तेलगू व कन्नड भाषांची गळचेपी होत होती. ऊर्दूचे अवाजवी प्रस्थ होते. बहुसंख्य हिंदू समाजाची अस्मिता सुक्तासुक्त मार्गाने निजाम शासनाने दडपून टाकली होती. याविरूद्ध संघटितपणे व दीर्घ लढा देऊन लोकजागृतीच्या माध्यमातून हैद्राबाद मुक्तिसंग्राम यशस्वी करण्यामध्ये सर्वात मोठा वाटा स्वामी दयानंद संस्थापित आर्य समाजाचाच होता. स्वातंत्र्यवीर सावरकर आणि हिंदू महासभा, स्वामी रामानंद तीर्थ आणि हैदराबाद स्टेट काँग्रेस यांचा १९३८ च्या सत्याग्रहात व त्यानंतरच्या मुक्ती लढ्यात महत्वाचा वाटा होता, पण त्या आधीपासूनच हिंदू समाजात अस्मिता जागविण्याचे ऐतिहासिक कार्य हैद्राबाद हायकोर्टाचे न्यायाधीश केशवराव कोरटकर यांनी आर्य समाजाच्या माध्यमातून केले होते. स्वामी दयानंदानंतर आर्य समाजाचे सर्वश्रेष्ठ नेते म्हणजे स्वामी श्रद्धानंद ! स्वामी श्रद्धानंदांना म.गांधी हे आपले मोठे भाऊ मानीत व गांधीजींना **'महात्मा'** पदवी स्वामीजींनीच दिली होती. स्वामी श्रद्धानंदांनी हरिद्वारजवळ गुरूकुल कांगडीची १९०१ साली स्थापना केली. या गुरूकुलासाठी हैद्राबादमधून केशवराव कोरटकर यांनी बरीच आर्थिक मदत मिळवून दिली व गुरूकुल कांगडी हे राष्ट्रीय शिक्षणाचे आर्य

www.thearyasamaj.org
समाजाचे प्रमुख केंद्र बनले. आज ही संस्था केंद्रीय विद्यापीठ म्हणून सर्वत्र ज्ञात आहे. परभणी जिल्ह्यातील कोरट (ता.वसमत) गावचे केशवराव (हायकोर्ट जज्ज) यांनी आपला मुलगा विनायक यांस १९०१ साली आर्य समाजाच्या गुरूकुल कांगडीमध्ये शिक्षणासाठी पाठविले. गुरूकुल कांगडीच्या स्थापनेच्या वेळी फक्त ५ विद्यार्थ्यांनी प्रवेश घेतला. त्यांपैकी स्वामी श्रद्धानंद यांचा मुलगा आणि केशवराव कोरटकरांचा मुलगा या दोघांचा समावेश होता. हैद्राबाद राज्यात पंडित विनायकराव विद्यालंकार यांनी आर्य समाज आणि काँग्रेस या दोन्ही संस्थांचे भरीव कार्य केले. उद्योगमंत्री आणि खासदार म्हणूनही विनायकराव कोरटकर यांचा हैद्राबाद राज्यात दबदबा होता.

-गणेशोत्सव व हवनातील साम्य-

लोकमान्य टिळकांनी इ.स.१८९३ मध्ये लोकजागृती व संघटन करून ब्रिटिश राजवटीविरूद्ध लढा लढविला हैद्राबादचे आर्य समाजी व काँग्रेस नेते पंडित नरेंद्रजी आणि विनायकराव विद्यालंकार यांनी होमहवन व यज्ञादी धार्मिक कृत्ये करण्याचा धार्मिक हक्क प्रस्थापित करण्यासाठी हैद्राबाद राज्यात १९३८ मध्ये सत्याग्रह-पर्व आरंभिले. दिल्ली, पंजाब उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश आदी भागातील आर्य समाजी नेत्यांनीही हैद्राबादच्या आर्य सत्याग्रहात भाग घेतला. सुमारे १५ हजार सत्याग्रही त्यात सहभागी झाले असावेत. होमहवन हे धार्मिक निमित्त करून आर्य समाजाने हैद्राबादचा राजकीय लढा लढविला. लो. टिळकांनीही गणेशोत्सव व शिवजयंत्युत्सव यांचा राजकीय लढ्यासाठीच वापर केला. हैद्राबाद मुक्ती लढ्यात प.नरेंद्रजी, विनायकराव विद्यालंकार, हुतात्मा शामलालजी व भाई बन्सीलालजी, वेद प्रकाशजी, पं. ज्ञानेद्रजी शर्मा, पं. नरदेवजी स्नेही, आमदार देवदत्त मोहिते, गणपतरावजी कथले आदी स्थानिक नेत्यांबरोबरच राज्याबाहेरील पंजाब आदी ठिकाणांहून शेकडो सत्याग्रही जत्थे हैद्राबाद राज्यात सत्याग्रहामध्ये सामील झाले. हैद्राबाद मूक्ति लढ्यातील आर्य समाजाच्या आंदोलनाचे हे वैशिष्टय आहे. मूक्ति लढ्याला व्यापक रूप आर्य समाजानेच आणले. आर्य समाज मूळतः मुस्लिम धर्माच्या किंवा इतर कोणत्याही धर्माच्या विरूद्ध नसला तरी हैद्राबादच्या स्वातंत्र्य लढ्याला हिंदू-मुस्लिम संघर्षाचे स्वरूप आले व ते तसे येणे निजामाच्या व रझाकारांच्या मुस्लिम धर्मांधतेमुळे स्वाभाविक होते. त्यामुळे आर्य समाज किंवा हिंदू महासभेच्या आंदोलनास जातीय धार्मिक लढा म्हणणे चुकीचे ठरेल. हैद्राबादच्या वीर यशवंतराव जोशी

www.thearyasamaj.org

(संपादक, हिंदू विजय) व त्यांच्या सहकाऱ्यांनी वीर सावरकरांपासून प्रेरणा घेऊन मुक्ति लढ्यात हिरीरीने भाग घेतला. दिंगबरराव जुक्कलकर, माधवराव पाठक, वसंत पाठक आणि माधवराव नांदेडकर यांनी हिंदू महासभेतर्फे निजाम विरोधी उठावात मोलाची कामगिरी बजावली. हिंदू महासभेचे कार्यकर्ते रामचंद्र वंदेमातम राव व त्यांचे बंधू वीरभद्रराव यांनीही प्राणांची बाजी लावली. अगदी कांही वर्षापूर्वी पर्यंत पंडित रामचंद्र वंदेमातरम् हे अखिल भारतीय आर्य समाजाचे नेते म्हणून हैद्राबाद व दिल्ली येथे कार्यरत होते. रामचंद्रराव यांनी हिंदू सभेचे काम सोडून दिले आणि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधी सभेमध्ये दिल्ली येथे अध्यक्षपद मिळविले. कांही वर्षापूर्वी त्यांचे निधन झाले. एकेकाळी या सर्व सावरकर अनुयायांनी हैद्राबादच्या मुक्ती लढ्याची जाम बागेतून (सुंदरबाग) सूत्रे हलविली होती. माजी आमदार चंद्रकांत मस्के (नांदेड) हेही सावरकरांच्या प्रभावळीतील हैद्राबादचे कार्यकर्ते होते.

स्वातंत्र्यलढ्याचा अपूरा इतिहास

भारतीय स्वातंत्र्य लढ्याचा प्रामाणिक विश्वासार्ह व बराचसा विस्तृत इतिहास उपलब्ध आहे. त्या तुलनेत हैद्राबाद मुक्ती लढ्याचा इतिहास फारसा लिहिला गेला नाही व जो थोडाफार लिहिला गेला, तो देखील एकांगी आहे. वीर सावरकर आणि हिंदू महासभा तसेच आर्य समाजाचे मुक्ती संग्रामातील कार्य यांचे यथोचित मूल्यमापन झाले नाही. आर्य समाजाच्या चळवळीला सुद्धा विशेष योग्य तो न्याय देण्यात आलेला नाही. हैद्राबाद स्टेट काँग्रेसच्या स्थापनेला राष्ट्रपिता म. गांधी यांचा विरोध होता. स्टेट काँग्रेसला सत्याग्रह स्थगित करण्यासही महात्माजींनी भाग पाडले. हैद्राबाद संस्थानातील काँग्रेसजनांनी महाराष्ट्र सामाजिक परिषदेच्या बॅनरखाली राजकीय लढ्याचे कार्य केले.पू. स्वामी रामानंद तीर्थ, गोविंदराव नानल, रवि नारायण रेड्डी, श्रीनिवासराव बोरीकर, दिगंबरराव बिंदू, देसाई, धूत आदींनी स्वातंत्र्य लढ्याला तेज आणून दिले.

वीर यशवंतराव जोशी, बी.एस.केसकर, ॲड. अंबादासजी, सेनापती, पा.म.बापट, धर्मवीर मुंजे, भोपटकर पाठक, नांदेडकर, जुक्कलकर आदींनीही लढ्याला धार आणली. आर्य समाजाची लढ्यातील कामगिरी तर सुवर्णाक्षरांनी नोंदवावी अशीच आहे. पण या संघर्षाची कहाणी नव्या तरूण पिढीला समजावून देणारे साहित्यच फारसे उपलब्ध नाही. सर्वश्री अशोक परळीकर (परभणी), ॲड. पुरूषोत्तमराव चपळगावकर (बीड) यांनी काही प्रमाणात हिदुत्वनिष्ठांना न्याय देण्याचा प्रयत्न केला आहे, पण या दोघांचेही लिखाण मोठ्या प्रमाणात लोकांपर्यंत पोहोचले नाही. त्या

www.thearyasamaj.org

मानाने अनंत भालेराव यांचे 'पेटलेले दिवस' व इतर साहित्य अधिक प्रमाणात लोकांपर्यंत गेले. स्वामी रामानंद तीर्थ ज्यांच्या साहसी जीवनकार्यामुळे प्रभावित झाले होते. त्या पं. नरेंद्रजींनी मुक्ती लढयाचा इतिहास रचला व त्रोटक स्वरूपात का होईना **'हैदराबाद के आर्यों की साधना और संघर्ष'** या ग्रंथात लढयाचा इतिहास संक्षेपाने नोंदविण्याचा प्रयत्न केला आहे. या ग्रंथात आर्य समाजी चळवळीचा साक्षेपी आढावा आणि कांही व्यक्तिचित्रे रेखाटली आहेत. सर्वश्री पंडित उत्तम मुनी, चंद्रशेखर बाजपेयी, प्राचार्य देवदत्त तुंगार प्रा.सुग्रीव काळे, स्वामी श्रद्धानंदजी, पोशट्टीदादा (देगलूर), सुभाष कंधारकर (वाजेगाव), वेदकुमार वेदालंकार (उस्मानाबाद), संग्रासिंह चौहान ऊर्फ स्वामी संतोषानंद, मुख्याध्यापक होळीकर, दौलतरावजी गिरवलकर आदींचा पंडित नरेंद्रजींनी मुद्दाम उल्लेख करून त्यांनी भावी काळात आर्य समाजाचे दीपस्तंभ व्हावे, अशी शुभेच्छा व्यक्त केली आहे. पंडितजींच्या या पुस्तकाचे इतर भाषांतून भाषांतर झाले पाहिजे.

-'निरामय', कलामंदिरा मागे, नांदेड, मो.०९३७२५४१७७७

आर्यांची शौर्यगाथा-मुक्तिसंग्राम

-पं. प्रशांतकुमार शास्त्री

१७ सप्टेंबर १९४८ हे हैद्राबाद स्वातंत्र्य संग्रामाचे एक ऐतिहासिक व रोमांचकारी असे सोनेरी पान आहे. १५ ऑगस्ट १९४७ रोजी संपूर्ण भारत देश इंग्रजांच्या गुलामगिरीतून मुक्त झाला असला तरी हैद्राबाद राज्यातील भूमिपुत्र हे मात्र निजामाच्या पाशवी दास्यामध्येच अडकले होते. ब्रिटीश सरकारच्या छत्रछाये खाली वाढलेल्या निजाम सरकारने आर्यजनतेवर मानवतेला काळीमा फासणारे अत्याचार सुरू केले होते. मुद्रण, भाषण, धार्मिककार्य इत्यादी स्वातंत्र्यावर पूर्णपणे प्रतिबंध घालण्यात आला होता. निजामाच्या परवानगीशिवाय साधी शोकसभा सुद्धा घेता येत नव्हती. अत्याचारी रजाकार भरदिवसा जनतेला लुटत होते.तर येथील महिलांवर ही मोठ्या प्रमाणात अत्याचार करीत होते. आर्यांच्या तक्रारींची दखल मात्र कोणीही घेत नसे. 'प्रोटेक्टेनेशन' या कायद्याखाली राज्यात आर्य (हिन्दू) हा आपल्या संपत्तीची खरेदी विक्री करू शकत नसे. मराठवाड्यातील ५, कर्नाटकातील ३, व तेलंगणाचे ८ अशा एकुण १६ जिल्ह्यांवर हैद्राबादचा निजाम आपले राज्य चालवित असे. मराठवाड्यात कासिम रिझवीच्या रजाकारांनी असह्य अत्याचार चालू ठेवले. इत्तेहादूल मुसलमानां १८ प्रकारचे खुन माफ होते. त्यामुळे हिन्दू मुसलमानात दंगे भडकवून हत्याकांड होत

www.thearyasamaj.org

असत, पण असे किती दिवस व कुठपर्यंत चालणार ? सहनतरी कसे काय होणार ? निजामाच्या पापाचा घडा भरत आला होता. राज्यातील स्वाभिमानी आर्य जनता खडबडून जागी झाली. अत्याचारी राजवटीचा निःपात करण्याचे बळ सर्वांमध्ये एकवटून आले.

निजामाच्या विरोधात जनतेत संतापाची लाट उसळली. संघर्षाचा वडवानल पेटला. क्रांतिपर्वाचा नवा अध्याय सुरू झाला. वृत्तपत्रांवर बंदी असतांना सुद्धा संग्राम, रणदुंदुभी, सत्याग्रह यांसारखी वृत्तपत्रे मुक्तपणे प्रकाशित होऊ लागली. समाजपरिवर्तनाच्या क्रांतिसाठीच जणू कांही जन्मलेल्या आर्य समाजाने निजामसरकारच्या विरूद्ध सुलतान बाजार हैद्राबाद येथे पहिला सत्याग्रह केला.

महाराष्ट्र परिषद, कर्नाटक परिषद व आंध्र परिषद या संघटनांनी मिळून एकजुटीने हैद्राबाद स्वातंत्र्य आंदोलन छेडले. सरकारच्या विरोधात ठिकठिकाणी सभा, संप,बहिष्कार, सत्याग्रह व अधिवेशने होऊ लागली. औरंगाबाद येथे 'वंदे मातरम्' चळवळ सुरू झाली. तलवारीच्या बळावर जशास तसे उत्तर देण्यासाठी हैद्राबाद मुक्तिसंग्रमातील क्रांतिकारकांनी 'ॲक्शन समिती व सशस्त्र दले' उभी केली. दारूगोळा खरेदीसाठी आवश्यक असणाऱ्या धनाकरिता नांदेड जिल्ह्यातील उमरी येथील बँक अगदी सुनियोजितपणे लुटण्यात आली. आर्य जनतेत बलिदान देण्यापेक्षा बलिदान घेण्याची भावना जोर धरू लागली. गोदावरीबाई टेके सारख्या वीरागंणांनी हातात बंदुक घेऊन अत्याचारी निजाम सैनिकांचे मुडदे पाडले. निजामी सरकारला सळो की पळो करून सोडले. निजाम राजवटीने क्रांतिकारकांना तुरूंगात डांबून ठेवण्यास सुरूवात केली. स्वामी रामनंद तीर्थ, भाई श्यामलाल, भाई बन्सीलाल,पं. नरेंद्रजी यासारख्या क्रांतिकारकाना तुरूंगात डांबण्यात आले. परिणामी जागोजागी जेलभरो आन्दोलन सुरू झाले. आता हा प्रश्न हैद्राबाद पुरताच मर्यादित न रहाता संपूर्ण भारताची अस्मिता बनलेला होता. आर्य समाजाच्या नेतृत्वाखाली अखिल भारतातील सत्याग्रही लोकांचे जत्थेच्या जत्थे येऊ लागले. त्यांना अडविण्यासाठी व तुरूंगात डाबण्यासाठी निजामाची कारागृहे अपुरी पडू लागली. शासन व्यवस्था कोलमडली आणि निजामाचे सिहासन डळमळीत झाले.

शेवटी भारत सरकारतर्फे गृहमंत्री सरदार वल्लभभाई पटेल यांनी पोलिस ॲक्शन घडवून आणली. जनतेच्या अपूर्व त्याग, तप, व बलिदानापुढे निजाम सरकारने गुडघे टेकले. १७ सप्टेंबर १९४८ चा हाच तो ऐतिहासिक व गौरवशाली दिवस आजच्या दिवशी हैद्राबाद राज्यातील जनतेने सुटकेच्या निःश्वास सोडला. त्या सर्व वीरांना शतशः अभिवादन !

-शास्त्री निकेतन, माणिकनगर,
परळी-वै.मो. ९८८१४१६९८६

www.thearyasamaj.org

'संस्कृतच्या अध्ययनाने अमृतत्वाची प्राप्ती'

भौतिक ऐश्वर्याबरोबरच पारलौकिक सुख प्राप्त करण्याचे सामर्थ्य संस्कृत भाषेत असून हिच्या अभ्यासाने मानव अमरत्वाला प्राप्त होतो. याकरिता सर्व स्तरातून या दिव्या भाषेचा सवित्र प्रसारा व्हावा, असे प्रतिपादन वैदिक विद्वान डॉ.विमलकुमारजी आर्य (हरडोई उ.प्र.) यांनी केले.

परळी येथील आर्य समाजात दि. २० ऑगस्ट २०१३ रोजी सामूहिक स्वरूपात **संस्कृत दिन समारंभ** उत्साहात पार पडला. याप्रसंगी प्रमुख मार्गदर्शक पाहूणे म्हणून श्री आर्य वरील विचार मांडत होते. अध्यक्षस्थानी सामाजिक कार्यकर्ते व परळी आर्य समाजाचे मंत्री श्री उग्रसेन राठौर हे होते, तर प्रमुख पाहुणे म्हणून आर्य भजनोपदशेक पं. कर्मवीरजी आर्य, ज्येष्ठ पत्रकार श्री जी.एस. सौंदळे, छोटेलाल आदि उपस्थित होते.

कार्यक्रमाची सुरूवात वेदमंत्र पठण, संस्कृतगीतिका व श्लोक गायनाने झाली. प्रास्ताविक सहसंयोजक पं. प्रशांतकुमारशास्त्री यांनी केले. यावेळी संस्कृत श्लोक व भाषण स्पर्धेतील विजयी विद्यार्थ्यांना मान्यवरांच्या हस्ते पारितोषिकांचे वितरण करण्यात आले. हे पुरस्कार दिवंगत ज्येष्ठ सामाजिक कार्यकर्ते स्व.श्री नंदलाल लाहोटी यांच्या स्मरणार्थ श्री जयपाल लाहोटी व समस्त लाहोटी परिवाराच्या वतीने ठेवण्यात आले होते. कार्यक्रमाचे सूत्रसंचलन प्रा.अरूण चव्हाण व सौ. उज्वला ठोके यांनी केले. पाहुण्यांचा परिचय प्रा.अतुल नरवाडकर यांनी करून दिला, तर आभार डॉ.वीरेंद्र शास्त्री यांनी मानले. हा कार्यक्रम यशस्वीकरण्यासाठी सर्वश्री रंगनाथ तिवार, नरेश शास्त्री, तानाजी शास्त्री आदिनी प्रयत्न केले. या प्रसंगी सर्वश्री पं. कर्मवीरजी, जी.एस.सौंदळे, जयपाल लाहोटी आदिनींही विचार मांडले.

आचार्य भृगु अतिथिगृहाचे परळीत उद्घाटन

परळी येथील आर्य समाजात नव्याने बांधण्यात आलेल्या आचार्य भृगु अतिथि गृहाचे उद्घाटन दि.२० ऑगस्ट रोजी वैदिक विद्वान डॉ.श्री विमलकुमार आर्य यांच्या प्रमुख उपस्थितीत व दानदाते श्री योगेश विजयकुमार मेनकुदळे आणि सौ.नर्मदादेवी व श्री देविदासराव कावरे यांच्या शुभहस्ते पार पडले.

दिवंगत सामाजिक कार्यकर्ते व आर्य समाजाचे सहयोगी स्व. गुरूलिंगअप्पा मेनकुदळे यांच्या स्मरणार्थ त्यांचे सुपुत्र श्री विजयकुमारजी व स्नुषा

www.thearyasamaj.org

सौ.सुरेखाबाई मेनकुदळे यांनी दोन लाख रूपयांचा तर स्व.श्री कोंडिबाराव कावरे यांच्या स्मरणार्थ त्यांचे सुपुत्र व म.दयानंद व्यायामशाळेचे अध्यक्ष श्री देविदासराव कावरे व स्नुषा सौ. नर्मदादेवी कावेर यांनी १ लाख रूपयांचा निधी आर्य समाज परळीस प्रदान केला. या निधीतून वरील अतिथिगृहाचे बांधकाम पूर्ण झाले आहे. याप्रसंगी आर्य समाज परळीच्या वतीने दानदात्यांचा जाहीर सत्कार ही करण्यात आला व दोन्ही कुटुंबांचे ऋण व्यक्त करण्यात आले.

शोक वार्ता

अमृतराव माचरडे यांचे निधन

मुदखेड येथील आर्य समाजाचे सहयोगी व दानशूर कार्यकर्ते श्री अमृतराव ग्यानोबा माचरडे यांचे दि. ६ जुलै २०१३ रोजी हृदयविकाराने दुःखद निधन झाले. मृत्यु समयी ते ८२ वर्षाचे होते. त्यांच्या मागे तीन मुले, सुना, दोन मुली, जावई व नातवंडे असा परिवार आहे. श्री माचरडे हे एक कष्टकरी, प्रामाणिक आणि धैर्यवंत शेतकरी होते. वेळोवेळी आर्य समाजाला मदत करून त्यांनी मोठे सहकार्य केले आहे.

सौ. पद्मीनबाई गडम यांचे देहावसान

माजलगाव येथील आर्य समाजाचे मंत्री श्री अनंतराव रूद्रवार यांच्या मामी सौ. पद्मीनबाई उत्तमराव गडम यांचे दि. २४ ऑगस्ट २०१३ रोजी सायंकाळी ७ वा. च्या सुमारास दुःखद निधन झाले. मृत्यसमयी त्या ७५ वर्ष वयाच्या होत्या. त्यांचे पश्चात् पति, दोन मुले व दोन मुली असा परिवार आहे. त्यांच्या पार्थिव देहावर दुसऱ्या दिवशी पं. वीरेंद्र शास्त्री यांच्या पौरोहित्याखाली वैदिक पद्धतीने अत्यंसंस्कार करण्यात आले याप्रसंगी प्रतिष्ठित नागरिक, आप्तेष्ट व नातेवाईक उपस्थित होते.

विजयकुमार बेलापुरे यांचे आकस्मिक निधन

हाळी (ता.उदगीर) येथील आर्य समाजाचे कोषाध्यक्ष श्री ओमनाथ बेलापुरे यांचे चिरंजीव विजयकुमार बेलापुरे यांचा दि. ४ ऑगस्ट २०१३ रोजी दुपारी एका दुर्घटनेत दुपारी आकस्मिक दुर्देवी अंत झाला. मृत्यसमयी ते अवघे ३५ वर्ष वयाचे होते त्यांच्या मागे आई-वडील, पत्नी, एक मुलगा व एक मुलगी असा परिवार आहे. श्री बेलापुरे यांच्या आकस्मिक निधनामुळे हाळी परिसरात हळहळ व्यक्त होत आहे. त्यांच्या पार्थिवावर दुसऱ्या दिवशी अत्यंत शोकाकुल वातावरणात अंत्यसंस्कार करण्यात आले. याप्रसंगी आर्य समाजाचे प्रधान श्री शेषरावजी राजेमाने यांसह अनेकजण उपस्थित होते.

वरील तिन्ही दिवंगत आत्म्यांना म.आ.प्र.सभेची भावपूर्ण श्रद्धांजली !

www.thearyasamaj.org

आर्य समाज, परली-वै. द्वारा संचालित स्वामी श्रद्ध्दानन्द गुरूकुलाश्रम में दानप्रदात्री माता स्व. शान्तिदेवी मायर(लन्दन) द्वारा प्राप्त १५ लाख रूपयों के पावन दान से रूग्णों की सेवा में मराठवाडा (महाराष्ट्र) की पावन सन्तभूमि में सर्वप्रथम उद्‌घटित

स्व. दीवानचन्द मायर स्मृति संजीवनी आरोग्य मंदिर

शरीर शुद्धि से स्वास्थ्यलाभ, रोगनिवारण व सुंदरता प्राप्त करो।

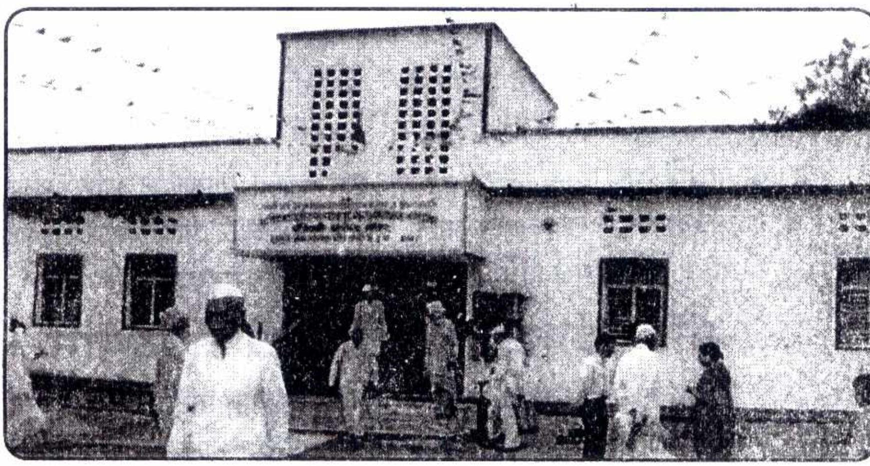

औषधिविना विविध प्रकार के जीर्णरोग, मधुमेह, रक्तचाप, ह्रदयविकार, कर्करोग, वातरोग, आमवात, कुष्ठरोग, मोटापा, चेहरों व आखों का कालापन, मुखमण्डल विद्रुप होना, वांग आदि के साथ मानसिक तान तनाव, निराशा, उद्विग्नता, पागलपन, आदि रोगों का शरीर शुद्धि के माध्यम से सम्पूर्ण इलाज। इसके लिए योग, प्राकृतिक व आयुर्वेद चिकित्सा के द्वारा स्वास्थ्य लाभ का सुनहरा अवसर इस आरोग्य मन्दिर में !

चिकित्सा समय

प्रातः ६ से ९/सायं. ४ से ६

-आरोग्य मन्दिर की विशेषताएं-

* तज्ज्ञ एवं अनुभवी वैद्यों द्वारा इलाज।
* महिला व पुरूष रूग्णों के लिए स्वतंत्र चिकित्सा कक्ष।
* महिला रूग्णों के लिए अलग से महिला परिचारिका।
* रूग्णों की भोजन व निवास की व्यवस्था अल्पदरों में।
* शुद्ध हवा-पानी व निसर्ग का सान्निध्य।
* आध्यात्मिक जीवनयापन के लिए प्रयत्न।

रूग्ण जांच व पंजीकरण

प्रातः १० से १२ बजे तक

पंजीकरण शुल्क रू. ५० (प्रति रूग्ण)

● चिकित्सक ●

वैद्य विज्ञानमुनि (मोबा.9975375711)   डॉ. ब्रह्ममुनि (मोबा.9421051904)

www.thearyasamaj.org

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभे तर्फे

डॉ. सौ. विमलादेवी व डॉ. श्री सुग्रीव काळे गौरव

राज्यस्तरीय महाविद्यालयीन निबंध स्पर्धा

निबंध स्वीकारण्याची शेवटची तारीख - ३१ डिसेंबर २०१३

विषय: अंधश्रद्धा निर्मूलना विषय म. दयानन्दांचे विचार

१) या स्पर्धेत कनिष्ठ व वरिष्ठ (११ वी ते पदवी अंतिम वर्ष) महाविद्यालयाच्या सर्व वर्गातील अधिकाधिक विद्यार्थ्यांना भाग घेता येईल. २) प्रत्येक स्पर्धकास मराठी किंवा हिंदी भाषेतून निबंध ३००० शब्दमर्यादेपर्यंत पाठवता येतील. ३) फुलस्केप कागदाच्या एकाच बाजूने सुवाच्य अक्षरात लिहीलेला निबंध ३१ डिसेंबर २०१३ पर्यंत पोंहोचेल या बेताने "संयोजक, डॉ. श्री व सौ. काळे राज्य. महाविद्यालयीन निबंध स्पर्धा, महाराष्ट्र आ. प्र. सभा, आर्य समाज परळी वैजनाथ जि. बीड" या पत्यावर पाठवावा.

४) स्पर्धक महाविद्यालयातर्फे निबंध पाठवित असेल तर त्याने प्राचार्यांचे पत्र निबंधा सोबत जोडावे किंवा तो आर्य समाजातर्फे पाठवत असेल तर त्याने तेथील आर्य समाजाच्या मंत्री किंवा प्रधानांचे पत्र सोबत जोडावे. ५) मागील स्पर्धेतील विजयी स्पर्धकांना या स्पर्धेत भाग घेता येईल.

६) पारितोषिके -अ) प्रथम रु. २०००/- , ब) द्वितीय रु. १५००/-, क) तृतीय रु. १०००/-, ड) प्रमाणपत्रे व वैदिक साहित्य.

निवेदक — महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभा

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभेच्या वतीने

सौ. तारादेवी व श्री जयनारायणजी मुंदडा यांच्या गौरवार्थ

राज्यस्तरीय विद्यालयीन निबंध स्पर्धा २०१३

विषय: महर्षी दयानंदांचे सामाजिक विचार

निबंध स्वीकारण्याची शेवटची तारीख - ३१ डिसेंबर २०१३

— स्पर्धेचे नियम व अटी —

१) या स्पर्धेत केवळ माध्य. विद्यालयाच्या (इयत्ता ८,९,१० वी वर्गाच्या) अधिकाधिक विद्यार्थ्यांना भाग घेता येईल. २) प्रत्येक स्पर्धकास मराठी किंवा हिंदी भाषेतून निबंध २००० शब्दमर्यादेपर्यंत पाठवता येतील. ३) फुलस्केप कागदाच्या एकाच बाजूने सुवाच्य अक्षरात लिहीलेला निबंध ३१ डिसेंबर २०१३ पर्यंत पोंहोचेल या बेताने "संयोजक, सौ. व श्री जयनारायणजी मुंदडा गौरव शालेय निबंध स्पर्धा, महाराष्ट्र आ. प्र. सभा, आर्य समाज परळी वैजनाथ जि. बीड" या पत्यावर पाठवावा.

४) स्पर्धक शाळेतर्फे निबंध पाठवित असेल तर त्याने मुख्याध्यापकाचे पत्र निबंधा सोबत जोडावे किंवा तो आर्य समाजातर्फे पाठवत असेल तर त्याने तेथील आर्य समाजाच्या मंत्री किंवा प्रधानांचे पत्र सोबत जोडावे. ५) मागील स्पर्धेतील विजयी स्पर्धकांना या स्पर्धेत भाग घेता येईल.

६) पारितोषिके -अ) प्रथम - रु. १५००/-, ब) द्वितीय रु. ११००/-, क) तृतीय रु. ७५१/- (तिघांना रु. १०० चे वैदिक साहित्य) ड) सर्व स्पर्धकांना प्रमाणपत्रे व वैदिक साहित्य भेट.

निवेदक - महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभा

www.thearyasamaj.org

www.thearyasamaj.org

खऱ्या गुरूंचा शोध घेत एके दिवशी मूळशंकर ओखी येथील मठात् पोहोचले. त्यांच्या तेजस्वी व्यक्तिमत्त्वाला पाहुन मठाचे प्रमुख खूपच प्रभावित झाले. त्यांनी मूळशंकरांचे मोठ्या प्रेमाने स्वागत केले. तिथे थांबून मूळशंकरने पाहिले की धर्माच्या नावावर अधार्मिक कामे होत आहेत. वेदांच्या नावावर निरर्थक ग्रंथ शिकविले जात आहेत.

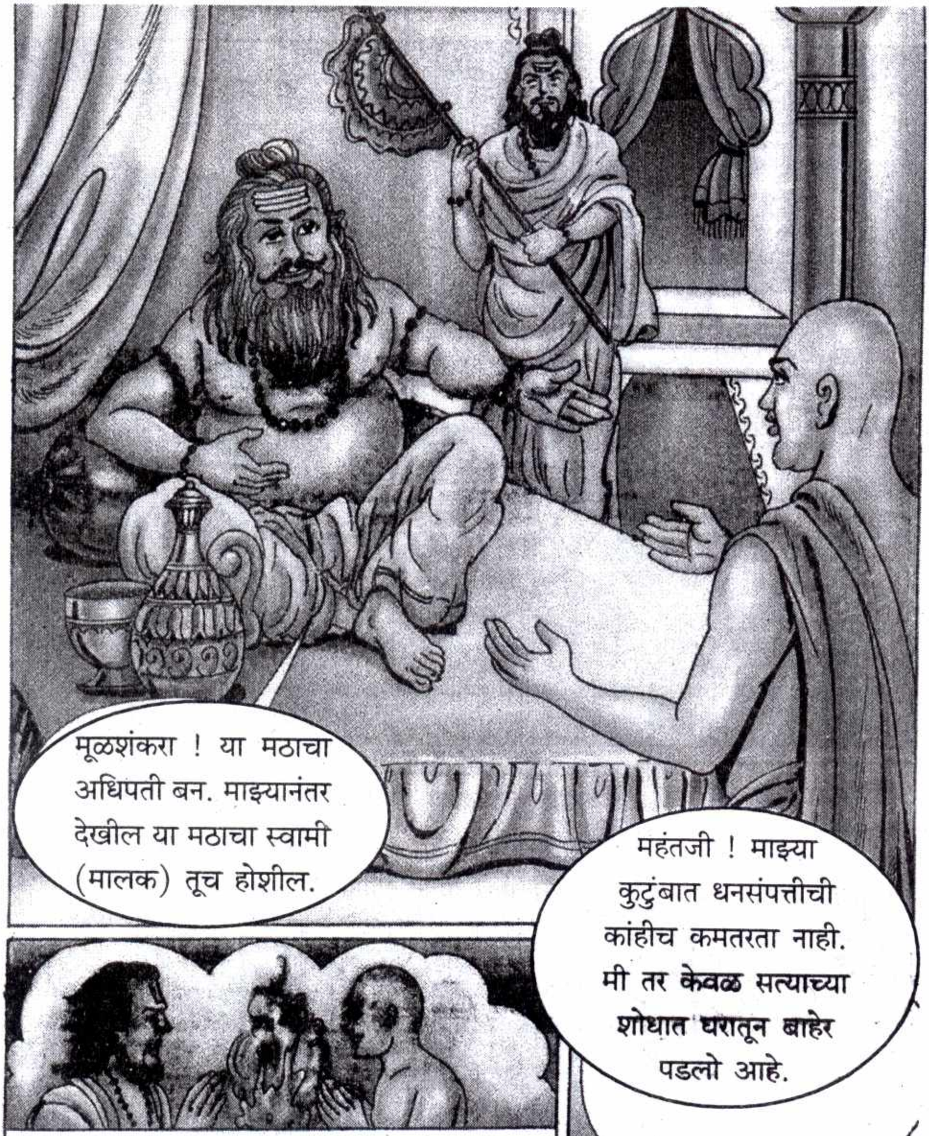

कांही दिवसांनंतर पूर्णानंद सरस्वतींकडून शुद्धचैतन्य मूलशंकराने संन्यास दीक्षा घेतली व ते **'स्वामी दयानंद सरस्वती'** म्हणून ओळखले जाऊ लागले. पुन्हा १२ वर्षांपर्यंत सद्गुरूंच्या शोधार्थ भटकत राहीले.

www.thearyasamaj.org

राजयोग

विक्रम संवत १९०६ मध्ये स्वामीजींनी स्वामी शिवानंद गिरी व स्वामी ज्वालानंद पुरी नामक दोन योगी साधूंच्या सान्निध्यात राहून पातंजल योग विद्या शिकली. दोन्ही योगी संतांनी योगसिद्धधांतांचे ज्ञान दिले, पण त्यासोबतच व्यावहारिक साधनेचे उत्तम प्रकारे प्रशिक्षण ही दिले.

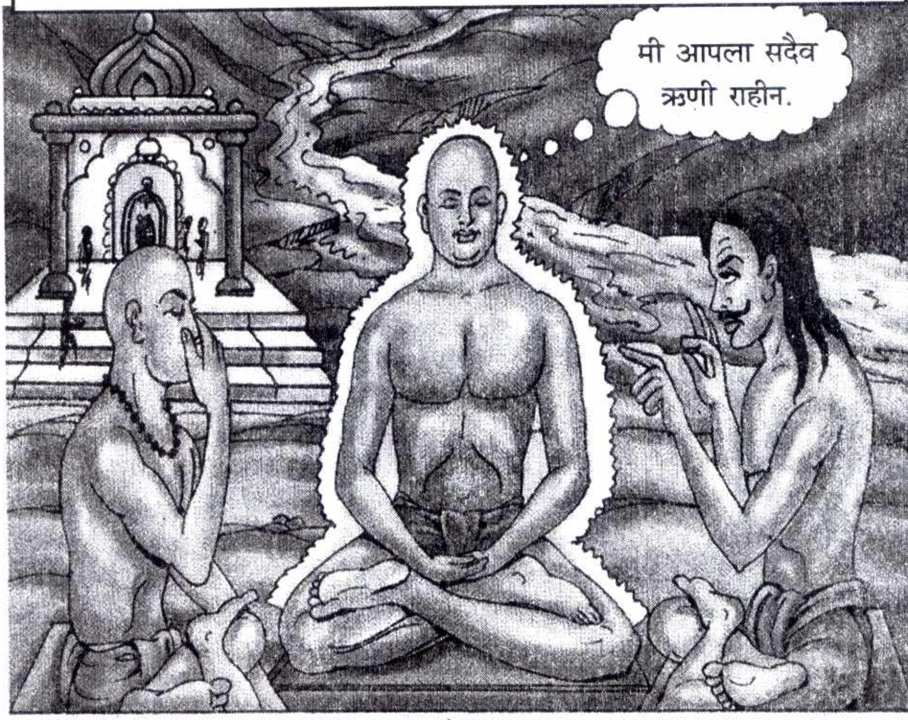

मांसाहाराचा विरोध

www.thearyasamaj.org

आर्य समाज गुंजोटी जीर्णोद्धार प्रगतिपथ पर

आर्य समजा सम्भाजी नगर की ओर से स्वामी संतोषान्दजी की स्मृति में रू. ५१,०००/- की राशि से बनाये गए बोअरवेल का उद्घाटन करते हुए श्री दयारामजी बसैये ।

'आर्य जलप्याऊ' का लोकार्पण करते हुए यशस्वी आर्य उद्योजक व दानशिल कार्यकर्त्ता श्री लखमसी भाई वेलानी (पुणे) । साथ में हैं आर्य कार्यकर्त्ता व बसैये परिवार ।

आचार्य भृगु अतिथि कक्ष का उद्घाटन

परली आर्य समाज में मेनकुदळे एवं कावरे परिवार की ओर से बनवाये गए आचार्य भृगु अतिथि कक्ष का उद्घाटन समारोह ।

Reg. No. RNI No. MAHBIL/2007/7493
Postal No. L-2/18/RNP/16/Beed/2012-14

सेवा में,
श्री

प्रेषक -
मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा,
आर्य समाज, परली वैजनाथ.
पिन ४३१ ५१५ जि.बीड. (महाराष्ट्र)

यह मासिक पत्र सम्पादक व प्रकाशक श्री मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा वैदिक प्रिंटर्स, परली वैजनाथ इस स्थलपर मुद्रित कर 'महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा' कार्यालय 'आर्य समाज, परली वैजनाथ ४३१ ५१५ जि.बीड (महाराष्ट्र)' इस स्थान से प्रकाशित किया।

हैदराबाद स्वतंत्रता संग्राम के भूमिगत सेनानी, आर्य समाज, संभाजीनगर (औरंगाबाद) के पूर्व प्रधान

स्व.श्री नरेन्द्रसिंहजी संग्रामसिंहजी चौहान की

जन्म ३१ मार्च १९२८ — पावन स्मृति में 'वैदिक गर्जना' मासिक का रंगीन मुखपृष्ठ सस्नेह भेट — निधन १७ मार्च २०००

सौजन्य

जुगलकिशोर चुन्नीलाल दायमा	दयाराम राजाराम बसैये	ॲड.जोगेंद्रसिंह नरेंद्रसिंह चौहान
प्रधान	मंत्री	कोषाध्यक्ष

आर्य समाज, महर्षि दयानंद भवन, सरस्वती कालोनी, संभाजीनगर (औरंगाबाद)